जून 2021

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

समाधि मरण यानी क्या कि अंतिम घंटे में दादा दिखाई देने लगे या फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान (ध्यान) रहा तो वह उसका सार आ गया।
समाधि मरण में खुद को अंतिम एक घंटे में समाधि ही रहती है।

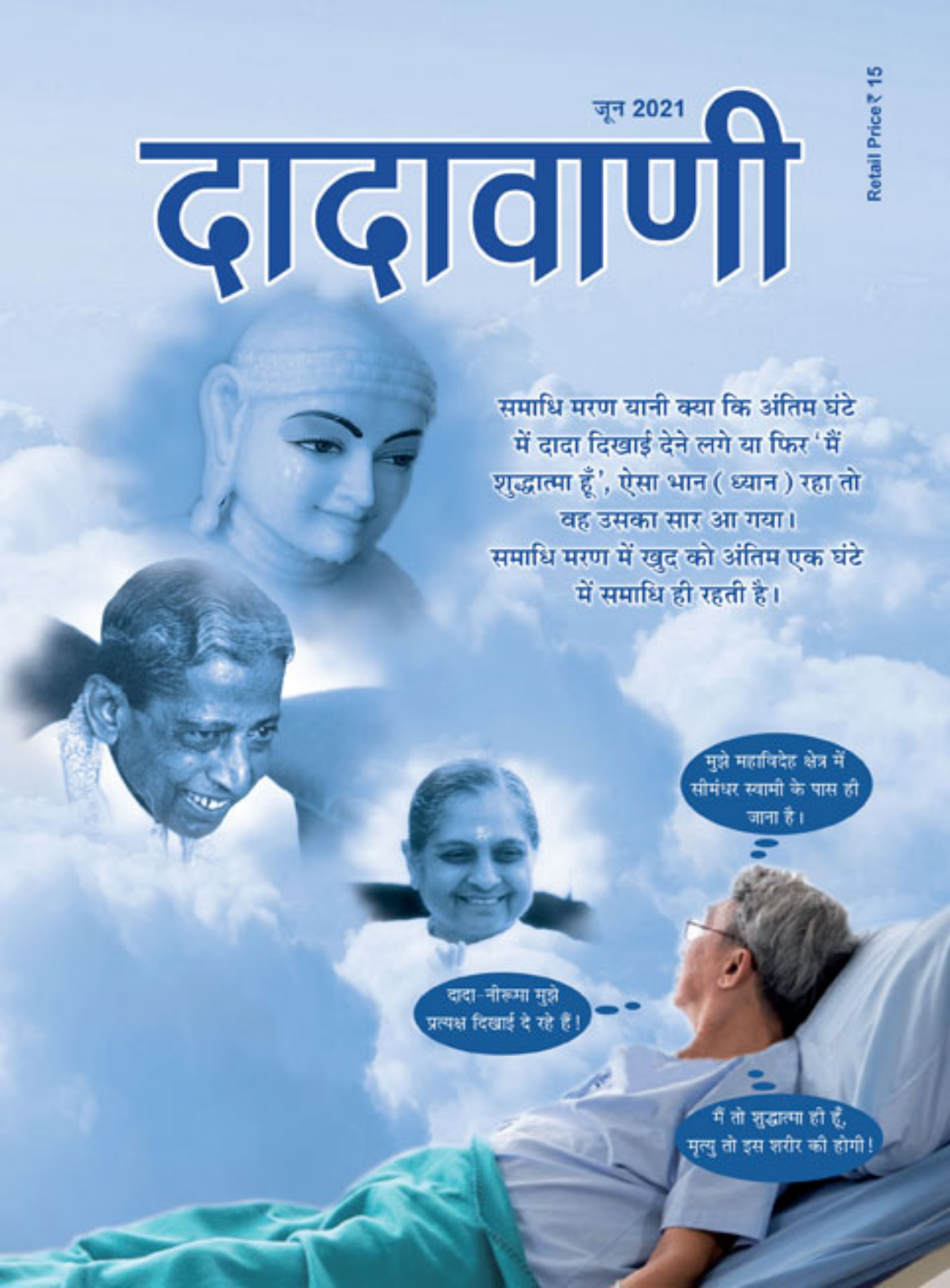

परम पूज्य दादा भगवान - पूज्य नीरूमा की भावना के अनुसार निर्मित 'सीमंधर सिटी'

वर्ष : 16 अंक : 8
अखंड क्रमांक : 188
जून 2021
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2021
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

महात्माओं को अंत समय में ज़रूर रहेगी समाधि दशा

संपादकीय

अक्रम विज्ञान द्वारा परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ने संसार बंधन की मुख्य जड़, 'कर्ता कौन है' और 'मैं कौन हूँ', का भेदविज्ञान के प्रयोग में खुद के स्वरूप का वास्तविक भान करवाया है। जिसके परिणाम स्वरूप प्रतिक्षण भय वाले इस संसार में महात्मा निरंतर निर्भयता से रहते हैं, यह इस काल का सब से बड़ा आश्चर्य है! लेकिन फिर भी महात्माओं की उम्र बढ़ने पर, शारीरिक वेदना के समय या मृत्यु नज़दीक आने पर कई बार उन्हें मृत्यु के डिस्चार्ज भय का भरा हुआ माल विचलित कर देता है।

अनंत जन्म देहाध्यास में रहकर पूर्ण किए। ज्ञान के बाद मैं इस शरीर से अलग आत्मा हूँ, ऐसी जागृति है फिर भी अंत समय के बारे में अनेक प्रश्न उत्पन्न होते हैं। जैसे कि मृत्यु के समय कैसे विचार आएँगे? मेरे आत्मा की कौन सी गति होगी, आयुष्य बंध कब पड़ेगा? मृत्यु की वेदना के समय अंतिम परिणति कैसी रहेगी, मैं शुद्धात्मा में रह पाऊँगा या नहीं? दादा उपस्थित रहेंगे या नहीं? महाविदेह जा पाएँगे या नहीं?

दादाश्री गारन्टी से कहते हैं कि अपने महात्माओं को मृत्यु के समय समाधि दशा ही रहेगी। समाधि मरण अर्थात् 'खुद के स्वरूप' के अलावा अन्य कुछ याद ही न रहे। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार कोई भी उपस्थित न रहे। सिर्फ आत्मा में ही रहे। मृत्यु के समय शरीर को वेदना हो या न भी हो लेकिन जो आत्मा में रहता हो, उसे इस वेदना या दुःख का अहसास ही नहीं होगा। इस ज्ञान का परिणाम ही समाधि दशा है। खुद की समाधि दशा है, उसकी क्या गारन्टी? अंदर से राग-द्वेष और मोह की डोर टूट जाती है, प्योर हो जाता है तब खुद को दुःख नहीं रहता और आसपास वालों को भी दुःख नहीं रहता। समाधि मरण तो बहुत उच्च प्रकार की दशा है, जो अनंत जन्मों के मरण को टाल देती है।

प्रस्तुत अंक में, दादाश्री अत्यंत करुणा से कहते हैं, जब महात्मा हमारी आज्ञा का पालन करते हैं तब उनके अंत समय में हमें उपस्थित रहना ही पड़ता है और उनकी उँगली पकड़कर सीमंधर स्वामी के पास ले जाना पड़ता है। जहाँ पर आज्ञा पालन हो वहाँ हमारी ज़िम्मेदारी है। जब अपने महात्माओं की मृत्यु नज़दीक आएगी तब शरीर को चाहे कितनी भी वेदना हो लेकिन खुद शुद्धात्मा की गुफा में बैठ जाएगा, वेदना के समय सहज रूप से खुद के अव्याबाध स्वरूप की रमणता में ही रहेगा। जब इस पेकिंग (शरीर) को छोड़ना होगा तब, 'केवल शुद्धात्मा अनुभव के अलावा कुछ भी नहीं चाहिए', वह जागृति अवश्य आ जाएगी। अब, महात्मा जीवन की अंतिम अवस्था में शरीर की 'मृत्यु' के समय, ऐसा ग़ज़ब का पुरुषार्थ कर सकें कि खुद को, आत्मा की खुमारी सहित 'मैं केवल ज्ञान स्वरूप ही हूँ' और शुद्धात्मा की जागृति सहित समाधि दशा प्राप्त हो जाए, यही हृदय की भावना!

- जय सच्चिदानंद

महात्माओं को अंत समय में ज़रूर रहेगी समाधि दशा

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

निजस्वरूप के भान से भय चला जाता है

प्रश्नकर्ता : मृत्यु निश्चित है, फिर भय क्यों है?

दादाश्री : ऐसा है न, निश्चित चीज़, वह अलग है। लेकिन भय क्यों लगता है? क्योंकि 'मैं चंदूभाई हूँ' इसलिए मृत्यु का भय लगता है। हमें, यह जो ज्ञान है, वह ज्ञान विभाविक ज्ञान है।

स्वाभाविक ज्ञान हो जाए तो वह भय चला जाएगा। वर्ना, जाएगा नहीं न! वह निश्चित है फिर भी भीतर परेशानी होती रहती है कि यह रह गया, बेटी की शादी बाकी रह गई, फलाना बाकी रह गया। लेकिन जब तक 'मैं चंदूभाई हूँ' तभी तक न! 'चंदूभाई' का पद न हो तो फिर छूट जाएगा भय वाला।' इसीलिए हम यह ज्ञान देते हैं न! जब ज्ञान देते हैं तब दोनों को अलग कर देते हैं। चंदूभाई वाला भाग अलग और आत्मा वाला भाग अलग। स्व अलग और पर अलग। होम डिपार्टमेन्ट अलग और फॉरेन डिपार्टमेन्ट अलग। दोनों को अलग-अलग कर देते हैं और लाइन ऑफ डिमार्केशन भी डाल देते हैं। जैसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच डिमार्केशन लाइन डाली है न, उसी प्रकार डिमार्केशन लाइन डाल देते हैं। ताकि कोई किसी की सीमा पार न करे। क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : सीमा पार नहीं करनी है।

दादाश्री : हाँ। ये तो मालिक बन बैठे हैं। जहाँ पर खुद नहीं थे वहाँ आरोपित भाव किया है तब फिर भय कब जाएगा?

प्रश्नकर्ता : जब स्वभाव में आएँगे, तब।

दादाश्री : खुद अपने निजस्वरूप का भान हो जाए कि, 'मैं यही हूँ' जब ऐसा भान हो जाएगा तब छूट जाएगा। भान हुए बगैर भय नहीं छूटेगा। और भय खत्म हो गया तो बन गया महावीर! बाल महावीर बन गया। फिर युवा महावीर, उसके बाद वृद्ध महावीर और चौथे महावीर मोक्ष में।

सेल्फ का रियलाइज़ेशन होगा तो सभी जन्मों का फल मिल जाएगा। यह तो लिफ्ट मार्ग है, वैभव वाला मार्ग है! लाख जन्मों तक भटकता रहेगा तब भी इसका एक अक्षर भी प्राप्त नहीं कर पाए, ऐसी बात है यह! यह तो स्व-पर की, होम और फॉरेन की बात है।

(निज)स्वरूप की मात्र श्रद्धा ही बैठे, तो जगत् में किसी भी कहीं डर लगेगा ही नहीं, भय चला जाएगा।

यह ज्ञान मिलने के बाद उसे किसी भी प्रकार भय उसे परेशान नहीं कर सकेगा, निरंतर निर्भय रह सकेगा। ऐसा हो सकता है या नहीं? किसी निर्भय को देखा है?

प्रश्नकर्ता : निर्भय, आप जिस सेन्स(संदर्भ) में कह रहे हैं, उस सेन्स में नहीं देखा।

दादाश्री : निर्भय हो ही नहीं सकते। वह तो, ये कृष्ण भगवान हो चुके हैं, ये महावीर भगवान चुके हैं। बाकी कोई नहीं हो सकता। मनुष्य की क्या बिसात निर्भय होने की? अर्थात् वीतरागता हो तभी निर्भय हो सकते हैं। जब राग-द्वेष नहीं हों तब निर्भयता होती है।

जिसका जन्म नहीं, उसकी मृत्यु कैसी?

प्रश्नकर्ता : मृत्यु क्या है?

दादाश्री : मृत्यु तो ऐसा है न, यह कमीज़ सिलवाई, तब कमीज़ का जन्म हुआ न, और यदि जन्म हुआ तो मृत्यु हुए बगैर रहेगी ही नहीं। कोई भी चीज़ जन्म लेती है तो उसकी मृत्यु अवश्य होती है। और आत्मा अजन्मा-अमर है, उसकी मृत्यु होती ही नहीं। यानी जितनी चीज़ें जन्म लेती हैं, उनकी मृत्यु अवश्य होती है और मृत्यु है तो जन्म होगा। अत: जन्म के साथ मृत्यु जोइन्ट ही है। जहाँ जन्म है, वहाँ पर मृत्यु अवश्य है ही।

प्रश्नकर्ता : परंतु मृत्यु, वह वस्तुस्थिति में क्या है?

दादाश्री : रात को सो जाते हो न, फिर कहाँ जाते हो? सुबह कहाँ से आते हो आप?

प्रश्नकर्ता : वह मालूम नहीं है।

दादाश्री : इसी तरह जन्म-मरण हैं। मरने के बाद जन्म लेने तक, बीच के काल में सोता है। जन्म के बाद वापस जगता है। 'खुद' शाश्वत है, इसलिए जन्म-मरण खुद का होता ही नहीं है न! ये जन्म-मरण तो अवस्था के हैं। मनुष्य वही का वही रहता है, परंतु उसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं या नहीं होतीं? बचपन की बाल अवस्था, फिर युवा अवस्था और वृद्धावस्था नहीं होती? ये अवस्थाएँ हैं, लेकिन 'खुद' तो एक ही है न? ये अवस्थाएँ शरीर की हैं। इसी प्रकार जन्म-मरण भी शरीर का है (पुद्गल का है) आत्मा का जन्म-मरण नहीं है। आपके 'खुद के', 'सेल्फ' का जन्म-मरण नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा का जन्म नहीं है, तो फिर जब *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) का जन्म होता है तब उसके साथ ही जुड़कर आत्मा भी जाता है, तो उसका जन्म हुआ, ऐसा नहीं कहा जाएगा?

दादाश्री : नहीं! आत्मा का जन्म हुआ, ऐसा नहीं कहा जाएगा न!

प्रश्नकर्ता : ऐसा कैसे? क्योंकि वह साथ ही जुड़ा हुआ है न।

दादाश्री : उसका स्वभाव ही नहीं है। खुद अजन्म स्वभाव वाला है। उसे इस *पुद्गल* का संयोग हुआ है। *पुद्गल* के संयोग में फँस गया है। उससे वियोग हो जाए तो खुद मुक्त ही है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वियोग हो जाए तो मुक्त हो जाएगा। लेकिन जब तक फँसा हुआ है तब तक *पुद्गल* के साथ उसका जन्म होता ही रहेगा न?

दादाश्री : उसका (आत्मा का) जन्म नहीं होता। जन्म तो शरीर का ही कहा जाता है और मृत्यु भी शरीर की। आत्मा मर गया, ऐसा कोई नहीं कहता न? शरीर मर जाता है और शरीर ही जन्म लेता है। लेकिन अभी जो आत्मा की अवस्था है, वह संसारी अवस्था है।

प्रश्नकर्ता : तो मृत्यु जैसी चीज़ है, क्या?

दादाश्री : मृत्यु तो, यह जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु होगी। जिसका जन्म ही नहीं

होता उसकी मृत्यु कैसी? अर्थात् आत्मा अजन्म-अमर है। और मृत्यु तो, इस शरीर का जन्म हुआ अत: उसे मर ही जाना है।

अहंकार को है मृत्यु का भय

ये जन्म-मृत्यु आत्मा के नहीं हैं। आत्मा परमानेन्ट वस्तु है। ये जन्म-मृत्यु इगोइज़म (अहंकार), के हैं। इगोइज़म जन्म लेता है और इगोइज़म मरता है। वास्तव में आत्मा खुद मरता ही नहीं। अहंकार ही जन्म लेता है और अहंकार ही मरता है।

प्रश्नकर्ता : परंतु आवागमन का फेरा किसको है?

दादाश्री : जो अहंकार है न, उसका आवागमन है। आत्मा तो मूल दशा में ही है। फिर जब अहंकार खत्म हो जाता है, तब उसके फेरे बंद हो जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : तो मृत्यु का भय क्यों रहता है सभी को?

दादाश्री : मृत्यु का भय तो अहंकार को रहता है, आत्मा को कुछ नहीं। अहंकार को भय रहता है कि 'मैं मर जाऊँगा, मैं मर जाऊँगा'।

जन्म-मरण हैं मात्र अवस्था

मृत्यु और जन्म, दोनों भ्रांति से दिखाई देते हैं। वह सिर्फ मानता ही है, दिखाई नहीं देता। मानता ही है कि मेरी मृत्यु हुई और मेरा जन्म हुआ, मेरी शादी हुई। वास्तव में हकीकत में तो ऐसा नहीं है। हकीकत में वह खुद आत्मा रूप ही है। लेकिन उसे *गाँठ* पड़ गई है कि 'यह मैं ही हूँ'।

वस्तु उत्पन्न नहीं होती और उसका विनाश भी नहीं होता। वस्तु की अवस्थाओं का विनाश होता है और वे उत्पन्न होती हैं। बचपन के समय बुढ़ापा नहीं होता। जब जवानी आती है, तब बचपन नहीं रहता। सभी अवस्थाएँ बदलती रहती हैं। अवस्थाएँ निरंतर बदलती रहती हैं लेकिन वे वस्तु नहीं होतीं। वे तो वस्तुओं की स्थितियाँ हैं। और यह जो शरीर बनता है, वह तो 'अपनी' भ्रांति की वजह से ऐसा मान लेते हैं कि 'यह शरीर मेरा है'। अगर भ्रांति चली जाए तो शरीर मिलना बंद हो जाएगा। उसके बाद भी अवस्थाएँ तो उत्पन्न होंगी ही। यानी कि ज्ञान और दर्शन के पर्याय उत्पन्न होंगे। कोई वस्तु दिखाई देती है तो पर्याय उत्पन्न होते हैं। वह वस्तु चली जाए तो फिर पर्याय खत्म हो जाते हैं। अत: उत्पन्न होना, विनाश होना, वह सब चलता ही रहता है।

ये सभी अवस्थाएँ खत्म (मरती) होती हैं। यह जो सर्दी का मौसम है, वह खत्म हो जाएगा या नहीं होगा? उसके बाद गर्मी के मौसम का जन्म होगा। इस प्रकार से अवस्थाओं की उत्पत्ति और विनाश होता ही रहता है।

अत: भान नहीं है कि किसका मरण हो रहा है और किसका जन्म! यह तो बिलीफ ही रोंग बैठी हुई है। लेकिन बहुत समय तक आगे बढ़ते-बढ़ते जब 'ज्ञानी पुरुष' मिलते हैं तब भान होता है कि जन्म-मरण तो अवस्था के हैं!

जो जीता और मरता है वह जीव है और जो अमर पद प्राप्त करता है, वह आत्मा! आत्मा 'सेल्फ' है और यह जीव 'रिलेटिव सेल्फ' है। जीव तो अवस्था है।

आत्मा के साथ जाता है सूक्ष्म शरीर

प्रश्नकर्ता : जब शरीर का नाश होता है, तब आत्मा कहाँ जाता है?

दादाश्री : ऐसा है न, आत्मा इटर्नल (शाश्वत) है, परमानेन्ट है, नित्य है। उसे कहीं भी जाना-आना होता ही नहीं है। और जब इस शरीर का नाश होता है, तब आत्मा को कहाँ जाना है, वह उसके खुद के अधिकार में नहीं है। वह भी 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' के ताबे में है। यानी जहाँ पर एविडेन्स ले जाएँ, वहाँ पर उसे जाना पड़ता है। इसमें, 'परमानेन्ट' वस्तु सिर्फ आत्मा ही है, बाकी सबकुछ टेम्परेरी है। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सबकुछ ही टेम्परेरी है। और आत्मा तो ऐसा है कि वह इस शरीर से बिल्कुल अलग है। जैसे यह कपड़ा और मेरी देह अलग ही है न? उसी प्रकार ये देह और आत्मा अलग हैं, बिल्कुल अलग हैं।

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के बाद आत्मा की कैसी स्थिति होती है?

दादाश्री : अभी जैसी है ऐसी की ऐसी ही स्थिति रहती है। उसकी स्थिति में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। सिर्फ, जब यहाँ पर मरता है, तब इस स्थूल देह को छोड़ देता है, और कुछ भी छोड़ता-करता नहीं है। अन्य संयोगों को साथ में ही ले जाता है। दूसरे कौन से संयोग? तब कहे, जो कर्म बाँधे हैं न वे, फिर क्रोध-मान-माया-लोभ और सूक्ष्म शरीर, वे सब साथ में ही जाते हैं। सिर्फ, यह स्थूल देह ही यहाँ पर पड़ा रहता है। यह (देहरूपी) कपड़ा बेकार हो गया, इसलिए छोड़ देता है।

प्रश्नकर्ता : और दूसरा देह धारण करता है?

दादाश्री : हाँ, दूसरा कपड़ा (देह) बदलता है सिर्फ, और कोई बदलाव नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के समय आत्मा शरीर के जो होल (छेद) हैं, उसमें से निकलता है, तो प्रश्न यह होता है कि आत्मा अरूपी है, रूपी नहीं है तो उसे होल की क्या ज़रूरत है? उसे होल की ज़रूरत ही नहीं होनी चाहिए न?

दादाश्री : सिर्फ आत्मा नहीं होता न! यदि आत्मा ही होता तो उसे ज़रूरत नहीं थी। आत्मा के साथ सूक्ष्म शरीर होता है और कारण शरीर (कॉज़ल बॉडी) होता है। इन दोनों बॉडी(शरीरों) को होल की ज़रूरत पड़ती है। होल के बिना वे नहीं निकल सकते।

स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीर के रहस्य

प्रश्नकर्ता : एक मृत देह को चिता पर रखने से उस समय जो स्थूल बॉडी है, वह तो जल जाती है और सूक्ष्म बॉडी तो तुरंत ही चली जाती है न?

दादाश्री : परमाणु जलते ही नहीं हैं न! वे परमाणु इतने सूक्ष्म हैं कि उनके सामने यह अग्नि स्थूल है। इसलिए परमाणुओं पर कुछ भी असर नहीं डाल सकती। तीनों ही शरीर *पुद्गल* हैं। (1) स्थूल देह (2) सूक्ष्म देह (3) कारण-देह। सभी गुनाह सूक्ष्म देह के गुनाह हैं। उसी वजह से कारण-देह परमाणुओं को खींचती है। इस स्थूल देह के परमाणु जलने के लिए आए हैं, सूक्ष्म देह जलने के लिए नहीं आया है। उससे कारण-देह उत्पन्न होता है, उससे कार्य उत्पन्न होते हैं। कारण-देह के परमाणु इतने अधिक सूक्ष्म हैं कि अपने शरीर जैसा आकार है। लेकिन जिस योनि में जाता है न, तब माँ और बाप के परमाणुओं का मिलन होने पर कारण-देह के जो सूक्ष्म परमाणु थे न, वे स्थूल होते जाते हैं, कार्य देह का विकास होता है और फिर बढ़ता जाता है।

स्थूल में से सूक्ष्म और फिर सूक्ष्म में से स्थूल होंगे। फिर वापस जो था वैसा ही चक्र।

प्रश्नकर्ता : कारण शरीर के परमाणु शरीर में कहाँ पर होते हैं?

दादाश्री : कारण शरीर तो पूरे शरीर में भरा रहता है, वह परमाणुओं के रूप में होता है। उन परमाणुओं में से फिर कार्य शरीर बनता है। ये परमाणु सूक्ष्म होते हैं। फिर अगले जन्म में उनसे इफेक्टिव बॉडी बनती है।

कारण में से ही कार्य होता है। कारण-देह बड़ के बीज जैसा है। (जिस प्रकार) उस बीज में पूरा बड़ होता है, उसी प्रकार से इस देह में कारण-देह है।

प्रश्नकर्ता : तो सूक्ष्म देह में आत्मा स्वतंत्र है या बँधा हुआ है?

दादाश्री : स्वतंत्र ही है, बँधा हुआ नहीं है। व्यवहार आत्मा बँधा हुआ है और मूल (निश्चय) आत्मा बँधा हुआ नहीं है। जिसका आप व्यवहार में उपयोग करते हो, वह आत्मा बँधा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : यह जो फिर से जन्म लेता है, वह सूक्ष्म देह लेता है न?

दादाश्री : हाँ, तो फिर आप ऐसा कहो न कि यह अहंकार जन्म लेता है! सूक्ष्म देह को तो पहचानते ही नहीं, कभी भी सूक्ष्म देह को तो देखा ही नहीं। सूक्ष्म देह शब्द बोलना सीख गए, वह तो किताब में पढ़कर। अत: अहंकार ही जन्म लेता है, ऐसा कहो न! अहंकार को पहचानते हो या नहीं पहचानते? अहंकार ही देह धारण करता है बार-बार। एक तो व्यवहार आत्मा है और दूसरा मूल आत्मा है। मूल आत्मा बँधा हुआ नहीं है, वह शुद्ध ही है।

यानी अहंकार की ही गड़बड़ है यह। अहंकार चला जाए तो मोक्ष हो जाएगा। बस, इतनी छोटी-सी बात समझ में आएगी न?

जिसे सूक्ष्म देह कहते हो वह, वही दूसरे जन्म में जाता है। यह प्रमाण तो हमें समझ में आता है न? बाकी सूक्ष्म को तो किस तरह से पहचानोगे? सूक्ष्म वस्तु अलग है, उसे तो 'ज्ञानी' ही जानते हैं। यह तो लोग किताब में पढ़कर 'सूक्ष्म देह, सूक्ष्म देह' बोलते हैं। बाकी जो स्थूल को ही नहीं पहचानता, वह सूक्ष्म को किस तरह से पहचानेगा?

मृत्यु के समय कुदरत के 'एडजस्टमेन्ट'

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के समय जब आत्मा एक देह छोड़ रहा हो, तब वह दूसरी देह में जाने से पहले कहाँ, कितने समय तक और किस तरह से रहता है? दूसरी देह में जाने में हर एक जीव को कितना समय लगता है?

दादाश्री : उसे बिल्कुल भी समय नहीं लगता। यहाँ इस देह में भी होता है और वहाँ योनि में प्रवेश करना शुरू हो जाता है। मरने वाला यहाँ बड़ौदा में और योनि वहाँ दिल्ली में होती है, तो आत्मा योनि में भी होता है और यहाँ इस देह में भी होता है। यानी कि इसमें टाइम ही नहीं लगता। देह के बगैर थोड़ी देर के लिए भी नहीं रह सकता है।

प्रश्नकर्ता : यानी इस देह को छोड़ने में और दूसरी देह ग्रहण करने में, इन दोनों के बीच में कितना समय लगता है?

दादाश्री : बिल्कुल भी समय नहीं लगता। यहाँ पर भी होता है, इस देह में से निकल रहा होता है यहाँ से और वहाँ योनि में भी हाज़िर होता है। क्योंकि यह टाइमिंग है, वीर्य और रज का संयोग होता है उस घड़ी। यहाँ पर देह छूटने

वाली होती है, तब वहाँ पर वह संयोग होता है। वह सब इकट्ठा हो जाए, तब यहाँ से जाता है। वर्ना वह यहाँ से जाएगा ही नहीं, क्योंकि यदि यहाँ से चला जाएगा तो वह खाएगा क्या? वहाँ योनि में गया लेकिन खुराक क्या खाएगा? पुरुष का वीर्य और माता का रज, वे दोनों ही होते हैं, और वहाँ जाते ही भूख के मारे उनको वह पूरा ही खा जाता है। और खाने के बाद फिर पिंड बनता है। बोलो अब, ये सब साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स हैं न?

प्रश्नकर्ता : वापस दूसरी जगह एन्ट्री भी होती है उसकी, ठीक है? यानी कि दूसरी जगह पर वह तुरंत बैठ ही जाता है, ऐसा?

दादाश्री : वह यहाँ से छूटा न हो और बड़ौदा में उसका जन्म होना हो, तो वहाँ बड़ौदा में योनि में उसका प्रवेश हो चुका होता है। यहाँ से, देह में से नहीं छूटा हो फिर भी वह उतना लंबा हो सकता है। अत: जब यहाँ से पूरी तरह से छूट जाएगा तब वहाँ योनि में प्रवेश हो जाएगा उसका। जब योनि में प्रवेश होता है तब सभी संयोग मिल जाते हैं। उसे योनि में प्रवेश से पहले कैसे संयोग मिलते हैं? पिता का वीर्य और माँ का रज, दोनों का मिलन होता है और यह वहाँ जाता है, तो जब यह वहाँ जाता है न तो जब वे दोनों मिलते हैं न, तो पूरा ही जो है वह, जैसे कि लोहे का गरम-गरम गोला हो न, लाल-लाल, और उस पर पानी डालें तो क्या पानी नीचे गिरेगा? लाल-लाल गोले पर बूंद-बूंद पानी डालें...!

प्रश्नकर्ता : तो वह पानी नीचे नहीं गिरेगा। उसकी तो भाप बन जाएगी न।

दादाश्री : गोला सारा पानी चूसकर कुछ देर में वह बन जाती है। तब उस गोले से भाप निकल जाती है। उसी प्रकार माता का रज और पिता का जो वीर्य है, वह सब जो होता है, उसे वह भोजन के रूप में पूरा ही खा लेता है, और उससे तुरंत ही पिंड बन जाता है। और फिर शुरुआत होती है पिंड की। लेकिन जब उनका मिलन होने वाला होता है तभी यहाँ से जाता है वर्ना नहीं जाता। यहाँ से देह कब छोड़ता है?

प्रश्नकर्ता : जब वहाँ उसकी पूर्व तैयारी हो चुकी हो, तब फिर इस जगह को खाली करता है।

दादाश्री : हाँ! यानी कि ये सब साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स हैं। और किसी प्रकार की चिंता-वरीज़ नहीं करनी हैं। आगे से आगे सारी तैयारियाँ हैं ही।

संकोच-विकास भाजन के गुण की वजह से जन्म दूसरी जगह पर

हर एक आत्मा, जब वहाँ योनि तैयार हो गई हो, वहाँ रहने की जगह तैयार हो गई हो, कमरा तैयार हो गया हो न, कब्ज़ा मिल सके ऐसा हो, उसी दिन वह यहाँ से निकलता है। यहाँ से निकलकर वह वहाँ पहुँचता है। कुछ तो यहाँ भी होते हैं और वहाँ भी होते हैं, इतने ज़्यादा लंबे हो जाते हैं। क्योंकि आत्मा संकोच-विकास वाला है। अत: जीव वहाँ भी गया होता है और यहाँ भी होता है। यहाँ से जा रहा होता है और वहाँ पर प्रवेश कर रहा होता है।

प्रश्नकर्ता : देह छूटते समय एक छोर यहाँ पर होता है और दूसरा छोर पंजाब में होता है, ऐसा कहते हैं। ऐसा किस तरह से है, ज़रा समझाइए।

दादाश्री : आत्मा संकोच-विकास का भाजन है, इसलिए कितना भी लंबा हो सकता है। तो,

जहाँ पर उसका ऋणानुबंध होता है, वहाँ पर जाना पड़ता है न! तब थोड़े ही यहाँ से पैरों से चलकर जाएगा? उसके पैर और स्थूल शरीर हैं ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : तो दोनों जगह पर रह सकता है?

दादाश्री : हाँ। यहाँ से जहाँ पर जाना हो, वहाँ तक उतना खिंच जाता है। फिर वहाँ पर घुसने की शुरुआत हो जाने पर यहाँ से बाहर निकलता जाता है। जैसे साँप यहाँ बिल में से निकल रहा हो तो एक भाग बाहर भी होता है और दूसरा भाग अंदर भी होता है, उसके जैसी बात है यह।

अहंकार के हस्ताक्षर के बाद मृत्यु

प्रश्नकर्ता : दादा, इसमें इस देह का आयुष्य कर्म तो होता ही है न?

दादाश्री : संसार की सभी चीज़ें आयु वाली हैं और 'हम' बिना आयु वाले, इन दोनों का मेल कैसे बैठे? आयु वालों की सोहबत में रहने से हमें भी आयु वाला बनना पड़ता है! उसी वजह से यह सारा झमेला हुआ है!

प्रश्नकर्ता : यदि आयुष्य कर्म बंधा हुआ हो अर्थात् एक हस्ताक्षर तो हो ही गए हैं न? पूर्व में हस्ताक्षर हो ही चुके होते हैं न?

दादाश्री : और क्या?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् मृत्यु तो डिसाइड हो ही गई है न?

दादाश्री : फिर भी हस्ताक्षर किए बगैर... नियम ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के समय मन हस्ताक्षर कर दे तभी मरण होता है न?

दादाश्री : मन हस्ताक्षर नहीं करता, अहंकार करता है। अहंकार हस्ताक्षर कर दे, उसके बाद नियमराज लेने आते हैं, वर्ना नियमराज भी लेने नहीं आते। कोई मालिक नहीं है। आप खुद ही *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक), तो फिर लेने आने वाला तू कौन?

लोग परसत्ता में हस्ताक्षर कर देते हैं, इसी कारण वे लोग हमेशा भय में रहते हैं।

वास्तव में 'खुद' मरता ही नहीं है। अहंकार ही मरता है और अहंकार ही जन्म लेता है। जब तक अहंकार हस्ताक्षर नहीं कर दे, तब तक मृत्यु आ ही नहीं सकती। लेकिन अभागा हस्ताक्षर किए बगैर रहता ही नहीं! जब बिस्तर में पड़े-पड़े दर्द से बहुत कराहता है या फिर बहुत ज़्यादा दु:ख आ जाए, तब हस्ताक्षर कर ही देता है कि 'इससे तो मरना अच्छा है'। हस्ताक्षर हो ही जाते हैं।

जाने की इच्छा किसी को नहीं होती। लेकिन कुदरत का नियम ऐसा है कि किसी भी इंसान को यहाँ से ले जाया नहीं जा सकता, मरने वाले के हस्ताक्षर के बिना उसे यहाँ से नहीं ले जाया जा सकता। ये जितने जीव मरते हैं न, वे सभी हस्ताक्षर सहित मरते हैं।

आयुष्य बंध नियमानुसार

प्रश्नकर्ता : दादा, आयुष्य बंध जो कहते हैं, वह क्या है? आयुष्य का बंध होने के बाद ही अगला जन्म तय होता है, ऐसा कहा है।

दादाश्री : आयुष्य का बंध तो ऐसा है न, कि एक व्यक्ति की उम्र 81 साल की हो, ऐसा मानो न, सपोज़। तो उसका सब से पहला आयुष्य बंध 54 साल में होगा। तब तक आवारा गर्दी में,

शरारत में निकालेगा तब भी उसका कोई मालिक नहीं। लेकिन सार आएगा 54 साल में, कि अभी तक भाई ने क्या किया? 54 साल बीत गए, सार आ गया और उस समय कोई बीमारी आएगी और आयुष्य बंध होगा। बीमारी नहीं हो तब भी आयुष्य बंध होगा। आयुष्य का बंध पड़ जाता है। अब उस समय जानवर का आयुष्य बंधा। क्योंकि जवानी में सारे चाहे कैसे भी खराब कर्म किए थे। आर्तध्यान-रौद्रध्यान किए थे। अत: 54 साल में यह हुआ, अब बचे 27 साल। उसके बाद 18 साल बीतने पर फिर से बंधेगा। तो 72 साल में फिर से बंधेगा। तो वह जो आयुष्य है न... उन 18 सालों में वह मेरे पास (सत्संग में) आने लगा, तो वह पहले वाला आयुष्य खत्म होकर और देवगति का बंध जाता है। फिर 72वें साल के बाद 9 साल बचे। फिर 6 साल बीत जाने के बाद फिर 78वें साल में फिर से बंधता है। तीसरी बार, थर्ड टाइम 78वें साल में। तब देवगति न जाने कहाँ चली जाती है और फिर से मनुष्यगति का बंध पड़ता है। जो उल्लास भरे परिणाम थे, वे मंद हो गए। शुरू-शुरू में बहुत उल्लास में होते हैं न? आपके कैसे थे?

प्रश्नकर्ता : ऐसे ही हैं।

दादाश्री : अच्छा आयुष्य बंध जाता है। अब 3 साल बचे न? 80वें साल में चौथी बार आयुष्य बंध पड़ता है। उस समय वैसे का वैसा ही नज़दीकी ही होता है। फिर 81 साल में, अंतिम साल में, उसके 80 साल और 8 महीने बीतने पर वापस बंधता है। अब 4 महीने रहे पास में, 120 दिन।

फिर जब 40 दिन रह जाते हैं, तब फिर से बंध जाता है। फिर 27 दिन बीत जाने के बाद फिर से बंधता है। ऐसे करते-करते अंतिम दिन (आयुष्य बंध) कम-ज़्यादा, कम-ज़्यादा, बंधता है और मिटता है। बंधता है और मिटता है, ऐसा होता रहता है। अंतिम 1 घंटे में तो 5-7 बार आयुष्य बंधता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हमें उसका पता कैसे चलेगा?

दादाश्री : पता क्यों नहीं चलेगा, वह? जैसे कि बहीखाते का सार निकालना आता है न तो यह सार निकालना नहीं आएगा? कि इतने सालों बाद मैं किसी खराब काम में नहीं पड़ा!

प्रश्नकर्ता : यह जो अंत में बंधता है, अंत में।

दादाश्री : वह तो बहुत अच्छा बंधता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह सब जो बंध गया होता है उसका भी कुछ सार उसमें आएगा न?

दादाश्री : तीसरे हिस्से का आयुष्य शेष रहने के बाद इंसान को सावधान होकर चलना चाहिए कि अब अगले जन्म की फोटो खिंचेगी। आयुष्य का काल नहीं बदला जा सकता लेकिन गति में बदलाव हो जाता है। टिकट (गति) में बदलाव हो सकता है लेकिन मरण में बदलाव नहीं हो सकता। मृत्यु के समय 'या मति: सा गति:'।

अंतिम समय में आता है सार

प्रश्नकर्ता : मनुष्य जब अंतिम घड़ी में हो, तब उसे क्या-क्या विचार आते हैं? क्या-क्या दिखता है?

दादाश्री : मरते समय हिसाब आएगा, लेखा-जोखा आएगा। पूरी ज़िंदगी आप ने जो किया उसका लेखा-जोखा मरते समय आएगा।

मरते समय पूरी ज़िंदगी का सार देखता है, बहियाँ नहीं पढ़ता। बहियाँ यानी बहीखाते नहीं और हर रोज़ का हिसाब भी नहीं। वे दोनों नहीं पढ़ता। उन दोनों को पढ़ने में तो बहुत टाइम लगेगा और यह तो एक घंटे में पूरा कर देना पड़ता है। पूरी ज़िंदगी का सार अंतिम घंटे में देख लेता है और उस सार के अनुसार उसका अगला जन्म होता है।

पूरी ज़िंदगी का लेखा-जोखा आएगा, वह क्या है? चार पैरों वाला बनेगा या छः पैरों वाला बनेगा, वह अंदर पता चलता है या दो पैरों वाला भी बन सकता है। मनुष्य बन सकता या देवता भी बन सकता है, कह नहीं सकते। लेकिन जैसा किया होगा, वैसा मिलेगा। इसलिए पहले अपने आप का ध्यान रखना चाहिए।

यदि पूरी ज़िंदगी में भक्ति का सार अच्छा हो, सत्संग का सार अच्छा हो, तो वह सार बड़ा हो तो अंतिम घंटे में चित्त ज़्यादा से ज़्यादा उसी में रहेगा। विषयों का सार बड़ा हो तो मरते समय उसका चित्त विषय में ही जाएगा। किसी को बेटे-बेटी पर मोह हो तो अंतिम घड़ी में चित्त उसी में रहेगा।

अतः अभी जो कुछ कर रहे हैं, वह मृत्यु के समय एक *गुंठाणे* (48 मिनट) तक आएगा। अपने आप ही आएगा। जो-जो पूरी ज़िंदगी किया है उसका सार उस समय आएगा। अभी जो हाज़िर है, वही मृत्यु के समय हाज़िर। अभी संसार हाज़िर है तो मृत्यु के समय भी संसार हाज़िर, अभी शुद्धात्मा हाज़िर है तो मृत्यु के समय भी शुद्धात्मा हाज़िर। यानी मृत्यु के समय पूरी ज़िंदगी का फल आता है, उसके लिए कुछ भी करना नहीं पड़ता। हमें खुद याद नहीं रखना है, वह तो अपने आप ही परिणाम आएगा। जैसे अभी परीक्षा दें और बाद में रिज़ल्ट आता हैं न, उसके जैसा है।

प्रश्नकर्ता : अंतिम घंटे में यदि रौद्रध्यान हो जाए तो मनुष्य सबकुछ चूक जाता है?

दादाश्री : तब तो फिर सब खत्म हो गया कहा जाएगा। रौद्रध्यान तो क्या, परंतु आर्तध्यान हो जाए तब भी खत्म हो गया। 'मेरी पाँचवी बेटी का विवाह करना रह गया' ऐसा हो जाए तो, वह आर्तध्यान हुआ कहलाएगा। उससे जानवर (गति) में जाता है।

मनुष्यजीवन की क़ीमत कब पता चलती है? अंतिम घंटे में। तब, 'यह रह गया है, यह कर लूँ, वह रह गया है,' ऐसा सब होता रहता है, तब समझ में आता है कि मनुष्य जन्म की बहुत क़ीमत है! इसलिए इंसान को अंतिम सालों में बहुत जाग्रत रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मान लो कि इस जन्म में 90 साल की उम्र है। 85 साल तक गलत ही भाव किए और अंतिम 5 साल में 'ज्ञान' मिल गया तो अच्छे भाव किए। तो क्या वह 85 साल का धुल जाएगा?

दादाश्री : अंतिम घंटे में अच्छा हुआ, वही सही है। पूरा सार ही अंतिम घंटे में आता है। उसमें यदि ज्ञानी पुरुष से मिलना हो जाए तो वह अपना सबकुछ भूल जाता है। तब तो उसका काम ही हो गया।

सार के अनुसार करार

प्रश्नकर्ता : सबकुछ व्यवस्थित है तो अपना अगला जन्म, वह भी पक्का हो गया होगा अभी?

दादाश्री : व्यवस्थित तो, आपने यह 'ज्ञान' लिया है न, उसी मोमेन्ट से, जब तक इस देह

से छुटकारा न हो जाए तब तक इस देह के साथ का व्यवस्थित है। बाकी, अगली देह के लिए व्यवस्थित नहीं कहा है।

प्रश्नकर्ता : तो अगले जन्म का कैसे होगा?

दादाश्री : वह फिर नया एग्रीमेन्ट होगा उस समय।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह तो अभी से बंध चुका होगा न?

दादाश्री : वह बंध तो जाता है लेकिन वह रहता नहीं, वह टिकता नहीं। वह बदलता रहता है। जो अंतिम समय में बंध जाए वही अंतिम सच है। इनका बंध चुका होगा। कितने साल के हो गए?

प्रश्नकर्ता : पचास

दादाश्री : तो फिर बंध गया होगा। यदि 75 साल जीना हो तो (आयुष्य) बंध चुका होगा। फिर वापस बदल जाता है सब। 8-10 बार बदलता है, एक बार नहीं। पहले बैल का बंधता है, दूसरी बार देवता का बंधता है, तीसरी बार इंसान का बंधता है, चौथी बार फिर जानवर का बंधता है। ऐसे सब बदलता रहता है। हमने ऐसा कहा है कि 50 साल के बाद अच्छे कार्य करने चाहिए। सभी गलत बातें छोड़ देनी हैं, अभी तक का किया हुआ, पहले का तो खत्म हो जाएगा। 50 साल बाद अच्छी तरह करोगे तो वास्तव में काम हो जाएगा। और अंत समय में बदलते-बदलते जो रह गया, वही सही है। अंत समय में समाधि मरण होगा। अपने महात्माओं का समाधि मरण होगा। क्योंकि उनकी सारी इच्छाएँ पूरी होने को हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा होगा कि अगले जन्म में ज्ञान का योग मिले?

दादाश्री : अरे! योग नहीं, यह ज्ञान ही साथ में जाएगा! ज्ञान है तो वह योग किसका होना है? जो हो चुका है, वह साथ ही रहेगा। यह क्या पत्नी है कि वह साथ में नहीं जाएगी?

प्रश्नकर्ता : यानी कि फिर से व्यवस्थित तो रहा ही न?

दादाश्री : व्यवस्थित तो अगले शरीर के लिए शुरू होगा। इस शरीर का हिसाब पूरा हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो वह अगले शरीर का व्यवस्थित अलग रहेगा?

दादाश्री : जैसा इसका सार आएगा, उस अनुसार करार होंगे, लेकिन ज्ञान चला नहीं जाएगा, क्योंकि 'ज्ञान ही आत्मा है'। और कौन जाएगा वह? इन लोगों को ध्यान नहीं रहता इसलिए आत्मा और ज्ञान अलग चीज़ है, ऐसा समझते हैं लेकिन 'ज्ञान ही आत्मा है।'

प्रश्नकर्ता : और ये जो पाँच आज्ञाएँ हैं और ये बाकी के सभी जो टेका (आधार) ज्ञान दिए हैं, उनकी सारी समझ, वह सब साथ ही रहेगी?

दादाश्री : उसके बाद क्या वह कुछ इधर-उधर हो जाएगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं होगी न?

दादाश्री : आवरण तो आएगा थोड़ा। लेकिन सामने वाला कुछ बोले तो समझ में आ जाएगा, तुरंत अनावृत हो जाएगा।

ज्ञान जागृति हमेशा साथ ही रहेगी

प्रश्नकर्ता : यह जो ज्ञान लिया है, वह वापस अगले जन्म में भी रहेगा?

दादाश्री : रहेगा। ज्ञान कहीं चला नहीं जाता। अभी जिस ज्ञान में हो वही ज्ञान साथ में आएगा। जिस स्टैन्डर्ड में हो, वही स्टैन्डर्ड आपका वहाँ पर भी जारी रहेगा। अत: यही सब रहेगा। आज यहाँ हैं और कल जो होंगे, उसमें फर्क नहीं होगा ज़रा भी। फर्क इतना ही होगा कि सिर्फ यह शरीर बदलेगा। अन्य स्थिति वैसी की वैसी ही। और अभी जो चोर, बदमाश हैं उनका भी यहाँ पर जैसा है, वहाँ पर सब वैसे का वैसा ही रहेगा! अत: वहाँ पर कोई कुछ ले नहीं लेगा, यह ज्ञान हाज़िर रहेगा। तभी तो मोक्ष में जा पाओगे न! वर्ना, मोक्ष में कैसे जा पाओगे? और भूतकाल आपको याद नहीं रहता, वह तो बहुत ही उत्तम चीज़ है! और भविष्य काल जो है, वह व्यवस्थित के ताबे में है। अत: आपको वर्तमान काल में रहना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी आप जो समकित देते हैं, ज्ञान देते हैं, तो यह ठेठ मोक्ष में जाने तक हमेशा ही रहेगा न?

दादाश्री : यह तो मोक्ष ही हो गया है, अब, दूसरा (मोक्ष) बाकी रहा ही कहाँ? पहले अज्ञान से मुक्ति होती है। उसके बाद जब कर्म खत्म हो जाते हैं, तब फिर दूसरी मुक्ति।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगले जन्म में ज्ञान लेना पड़ेगा न?

दादाश्री : नहीं, यह ज्ञान तो साथ ही रहेगा। यह जो ज्ञान प्राप्त हुआ है न, वही का वही ज्ञान साथ आएगा।

ये जो आर्तध्यान और रौद्रध्यान बंद हुए हैं, वही परिणाम आपको तीर्थंकर के पास बैठा देगा। स्वभाव बदलने के बाद यहाँ किसके साथ रहने देगा? माँ-बाप कहाँ से लाओगे? जब तीर्थंकरों का जन्म होता है तो वे राजा के घर में जन्म लेते हैं, अच्छे घर में। लेकिन दोस्त तो, आसपास में जो पटेल-बनिये होते हैं, वे ही दोस्त होते हैं न? नहीं। उससे पहले तो देवता आ जाते हैं। देवता मनुष्य रूप में आकर उनके साथ खेलते हैं। वर्ना, उनमें गलत संस्कार पड़ जाएँगे। यानी कि सब संयोगानुसार मिल जाता है। आपकी तैयारी हो तो सब संयोग तैयार ही हैं। आप टेढ़े तो सब टेढ़े। आप सीधे हो गए तो दूषमकाल बाधक नहीं होगा। आपको ज्ञानी पुरुष मिले हैं, ऐसा ज्ञान मिला है। फिर चाहे ऐसे सात दूषमकाल हों, आपको क्या हर्ज है? आप अपने ज्ञान में रहते हो। आर्तध्यान और रौद्रध्यान नहीं होते। किसी का बुरा हो जाए, ऐसे भाव उत्पन्न नहीं होते, कभी भी।

अत: धर्मध्यान के फलस्वरूप एक जन्म और होगा। किसी के दो होंगे, किसी का एक होगा और किसी का कुछ लंबा भी हो जाए। लेकिन यह ज्ञान मिलने से मुक्ति है, वह निश्चित है। क्योंकि कर्म बंधन रुक गया है।

प्रश्नकर्ता : बीच के, कुछ जन्मों के बाद यदि छुटकारा होना ही है तो फिर अगले जन्मों में भी यही स्थिति जारी रहेगी क्या?

दादाश्री : स्थिति तो, यहाँ पर यदि निन्यानवे तक पहुँचे हों, तो निन्यानवे से फिर से आपका शुरू हो जाएगा। ये भाई इक्यासी तक पहुँचे हो तो इक्यासी से शुरू होगा।

प्रश्नकर्ता : यानी कि अगले जन्म में भी कर्म बंधन न हो, वैसी स्थिति जारी ही रहेगी?

दादाश्री : सारी स्थिति जारी रहेगी। जो ज्ञान आप लेकर आए हो न, वह तो यहाँ पर अंतिम स्थिति के समय, मृत्यु के समय भी हाज़िर

रहेगा और फिर अगले जन्म में वहाँ पर भी हाज़िर रहेगा।

प्रश्नकर्ता : वे जो एक-दो जन्म बाकी हैं, उसमें यह जागृति और यह मार्गदर्शन...

दादाश्री : वह सब तो साथ में रहेगा। यह जागृति, यह ज्ञान सबकुछ यहाँ से जैसा छूटेगा, वैसा ही वहाँ पर हाज़िर हो जाएगा। बचपन से ही ऐसा कुछ होगा जिससे कि लोगों को आश्चर्य होगा! इसीलिए कृपालुदेव इतनी कम उम्र में भी लिख पाए थे न, सब। यदि ज्ञान हाज़िर नहीं हुआ होता तो इतनी कम उम्र में नहीं लिख पाते।

प्रश्नकर्ता : अभी इस जन्म में अक्रम मिला है तो बाद के जन्मों में क्रमिक में जाना पड़ेगा या अक्रम ही रहेगा?

दादाश्री : फिर ऐसा कुछ रहा ही नहीं न! आत्मा प्राप्त हो गया तो हो गया, खत्म! फिर चाहे कुछ भी हो, वह सब *निकाली* है। अक्रम मिले या क्रमिक मिले, उससे हमें लेना-देना नहीं है। अपना यह ज्ञान हाज़िर ही रहेगा, ठेठ एक-दो जन्मों तक।

प्रश्नकर्ता : दादा, इस जन्म में तो आपका ज्ञान मिला है और आज्ञा भी मिली है तो अब अगले जन्म में कोई ये आज्ञा देगा या हम यहाँ से लेकर ही जाएँगे या क्या होगा?

दादाश्री : ये आज्ञा इस जन्म के लिए ही हैं। फिर इससे आगे तो आज्ञा आपके जीवन में उतर चुकी होंगी, आपको पालन नहीं करना पड़ेगा। इस जन्म तक ही आपको पालन करना होगा। अच्छी तरह पालन करोगे तो अगले जन्म में आपके अदंर ही उतर चुकी होंगी। आपका वह जीवन आज्ञा सहित ही होगा!

आज्ञा से रहो निर्भय पद में...

आप नि:शंक हुए हो, अब आज्ञा में रहो। बुढ़ापा निकाल दो। यह शरीर चला जाए तो भले जाए, कान काट ले तो काट ले, *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) को छोड़ ही देना है न। *पुद्गल* पराया है। पराई चीज़ अपने पास नहीं रहेगी। यह तो जब उसका टाइम आएगा, व्यवस्थित का टाइम आएगा, उस दिन जब भी (टाइम) होगा तब ले लेगा। अत: भय मत रखना। हम कहे, 'ले लो'। इसका मतलब यह नहीं है कि कोई फुरसत में बैठा है लेने के लिए। लेकिन उससे आप में निर्भयता रहेगी। 'जो होना हो वह हो जाए', कहें।

अब शांति हो गई। अब आप अलग और चंदूभाई अलग। अर्थी तो नाम वाले की निकलेगी। हम नामी नहीं हैं, अनामी हैं। अनामी की अर्थी नहीं निकलती। नाम वाले की अर्थी निकलती है। यह विज्ञान है! दो ही दिनों में एडजस्ट हो जाए, ऐसा है।

व्यवस्थित समझ में आते ही निर्भयता

प्रश्नकर्ता : क्या मनुष्य को पता चलता है कि इस टाइम पर और इस दिन मैं मरने वाला हूँ? वह कब पता चलता है?

दादाश्री : पता चलने वाला जमाना तो गया। जब अंदर की, हृदय की प्योरिटी होती थी तब पता चल जाता था, पहले से। और उस समय दु:ख नहीं होता था। पहले ऐसा बहुत होता था। सौ साल पहले।

बाकी, जो निष्पक्षपाती होते हैं, उन्हें तो सब पता चल जाता है। बोरिया-बिस्तर बाँध रहे हों तो पता नहीं चलेगा कि ये जाने की तैयारी

कर रहे हैं! अंदर बोरिया-बिस्तर बंध रहे होते हैं, वे हमें दिखाई भी देते हैं, फिर भी अगर अंदर नहीं देखें तो अपनी ही भूल है न? और पहले तो कुछ लोग इतने सरलकर्मी थे कि वे कहते भी थे कि 'पाँच दिन बाद, एकादशी के दिन मेरा छुटकारा है' और उसके अनुसार होता भी था!

प्रश्नकर्ता : मृत्यु होनी हो तो क्या उसका पता चल जाता है कि अब तीन दिन बाद मृत्यु होगी?

दादाश्री : उसका पता चले या ना भी चले। यदि पता चल जाए कि कल मर जाएँगे तो डर के मारे आज ही मर जाएगा, एक-दो घंटे में। अत: मनुष्यों को मृत्यु का पता नहीं चलता, वही अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : मृत्यु का भय नहीं है, परंतु मृत्यु के समय जो दु:ख होता है, उससे डर लगता है।

दादाश्री : दु:ख कैसा?

प्रश्नकर्ता : शारीरिक व्याधि।

दादाश्री : उसमें डर कैसा? 'व्यवस्थित' है न! 'व्यवस्थित' में अंधे होना होगा तो अंधा हो जाएगा, फिर उससे डर कैसा? 'व्यवस्थित' हमने 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) किया है, फिर कभी कुछ स्पर्श नहीं करेगा, कोई भय रखने जैसा नहीं है। निर्भय होकर घूमो। इस संसार का इतना ज़्यादा भय मत रखना कि जिससे परलोक बिगड़ जाए।

ज्ञान से टले वेदना का भय

प्रश्नकर्ता : वेदना का भय रहा करता है।

दादाश्री : वेदना होती ही नहीं तो वहाँ वेदना का भय कहाँ से होगा? वेदना तो उसे होती है कि जिसे भय हो! जिसे भय नहीं उसे वेदना कैसी? यह तो आपका 'वणिक माल' भरा हुआ है न? वह एकदम नरम होता है।

'चंदूभाई' से आप कहना कि 'दादा' ने कहा है : 'व्यवस्थित'। 'व्यवस्थित' कहने के बाद भय कैसा?

प्रश्नकर्ता : दो दिन से सिर दु:ख रहा था। वह ज़रा भी सहन नहीं हो रहा था।

दादाश्री : 'मुझसे सहन नहीं होता', ऐसा कहा कि वह पकड़ लेगा! परंतु 'हमें' तो कहना चाहिए, 'चंदूभाई, बहुत सिर दु:ख रहा है? मैं हाथ फेर देता हूँ। कम हो जाएगा।' परंतु 'मुझे दु:ख रहा है' कहा कि पकड़ लेगा! यह तो बहुत बड़ा भूत है!

प्रश्नकर्ता : *शाता*(सुख-परिणाम) मीठी लगती है और *अशाता*(दु:ख-परिणाम) अप्रिय लगती है।

दादाश्री : वह 'चंदूभाई' को लगती है न? 'चंदूभाई' से 'हम' कहें कि डिक्शनरी अब बदल दो। *अशाता* सुखदायी और *शाता* दु:खदायी। सुख-दु:ख तो सारे कल्पित हैं। मेरा यह एक शब्द सेट करके देखना, उपयोग करके देखना। यदि आपको ज़रा भी असर हो तो कहना।

प्रश्नकर्ता : कुछ रास्ता निकालने के लिए ही तो यह प्रश्न पूछ रहा हूँ।

दादाश्री : आप मुझसे पूछिए। फिर मैं कहूँ उस अनुसार करना। रास्ता तो यही है। और सिर पर तो ऐसा लेना ही नहीं है कि, 'मुझे दु:ख रहा है।' कोई कहेगा कि 'क्यों, आपको क्या हो रहा है?' तब कहना कि, 'पड़ोसी का सिर दु:ख रहा

है, उसे मैं जानता हूँ।' और 'यह' पड़ोसी है, ऐसा 'आपको' विश्वास हो गया है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो फिर दुःख किसलिए? पड़ोसी रो रहा हो तो हम भी क्या रोने लगें? हमें तो पड़ोसी को चुप करवाना चाहिए कि, 'भाई, रोना नहीं, हम हैं आपके साथ। डोन्ट वरी, घबराना नहीं।'

यह 'वणिक-माल', वह परेशानी आने से पहले ही घबरा जाता है। हमें तो चंदूभाई से कहना है कि, 'आपको कुछ भी नहीं होगा।' भीतर ऐसा विचार आएगा कि 'उस व्यक्ति से चला नहीं जा रहा, और मुझे भी ऐसा हो जाएगा तो?' ऐसे विचार आएँ तो आप कहना, 'चंदूभाई, हम बैठे हैं न! कुछ भी नहीं होगा।' 'आप' जुदापना के व्यवहार से बोलो न। यह तो साइन्स है। 'मुझे हुआ' कहा कि भूत पकड़ लेगा। इसलिए जगत् को सारे भूतों ने पकड़ा हुआ है!

जितने समय दादा को याद करे न तो दर्द मिटता चला जाता है। भय मुक्त रखता है। कोई भय नहीं, कुछ भी नहीं। कितने समय तक याद रहते थे?

प्रश्नकर्ता : लगभग याद ही रहते थे, निरंतर जैसे...

दादाश्री : निरंतर। पूरी ही जाग्रत काल!

प्रश्नकर्ता : हथोड़े पड़ने से कर्म खपते हैं क्या?

दादाश्री : नहीं! हथोड़े पड़ने से हमारे मन में से भय निकल जाता है कि जब अचानक ऐसा हो जाएगा तब क्या करेंगे? वह अभी से हथौड़े पड़ने की प्रैक्टिस हो गई, प्रैक्टिस में आ गया। वे कहते हैं, 'जब बहुत ज़्यादा *शाता* वेदनीय होती है तब तो बहुत अच्छा लगता है लेकिन जब *अशाता* वेदनीय आएगी तब क्या होगा?' तब कुछ नहीं होगा, क्या हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के समय उसे वेदना का असर न हो, ऐसी स्थिति हो सकती है क्या?

दादाश्री : हाँ! समाधि मरण होता है। असर की बात ही कहाँ रही, समाधि मरण होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस काल में ऐसा समाधि मरण संभव है?

दादाश्री : बहुत से लोगों का हुआ है। मृत्यु से पहले ही, यहाँ तो रोज़ समाधि रहती है तो फिर मृत्यु के दिन और क्या रहेगा? यदि रोज़ समाधि रहती हो न, तो बाहर भले ही पक्षाघात(लकवा) हुआ हो फिर भी वह समाधि में रहेगा। जिसे रोज़ समाधि रहती हो, उसका बाहर का वातावरण अलग होता है, अंदर का वातावरण अलग होता है। बिल्कुल अलग ही होता है।

ममता छूटते ही समाधि मरण

प्रश्नकर्ता : ऐसा सुना है कि जिस समय इंसान मृत्यु शैया पर होता है, उस समय उसे एक हज़ार बिच्छुओं (के काटने) की वेदना होती है तो उस समय यह ज्ञान रहेगा या नहीं रहेगा?

दादाश्री : यह ज्ञान हाज़िर रहेगा ही। मृत्यु के समय निरंतर समाधि में रहेगा। जो (ज्ञान) अभी भी समाधि में रखता है, वह ज्ञान मरते समय तो हाज़िर रहेगा ही।

प्रश्नकर्ता : नसें खिंच रही होती हैं, नाड़ियाँ टूट रही होती हैं...

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। नसें तो... चेतना रहित हो जाए न, फिर भी उसे अंदर ध्यान रहता है, शुक्लध्यान छोड़ता नहीं है न! एक बार उत्पन्न हो जाने के बाद फिर छोड़ता नहीं है। अभी भी चिंता नहीं होने देता न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो जो ध्यान चिंता नहीं होने देता, जो वर्ल्ड में कभी भी हुआ नहीं है, वैसा आज हुआ है। तो क्या वह आपको मृत्यु के समय छोड़ देगा? 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान (ध्यान) रहे तो उसे समाधि मरण कहा जाता है। फिर शरीर को चाहे कितनी भी पीड़ा हो, उसे नहीं देखना है। अर्थात् जाग्रत रहता है, उस समय। मोह कम हो जाता है इसलिए ममता कम हो ही जाती है। उसके बाद ममता का पता चलता है कि 'जिसके प्रति मैं ममता कर रहा हूँ, वह मेरा नहीं है।' तो ममता छूट ही जाती है। इसलिए फिर समाधि मरण हो ही जाएगा।

शरीर की पीड़ा फिर भी समाधि मरण

प्रश्नकर्ता : समाधि मरण में शरीर की पीड़ा नहीं होती न?

दादाश्री : इस शरीर को चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन भीतर में समाधि रहेगी ही। भीतर वैसी की वैसी समाधि रहा करेगी। यह शरीर तो उसका जो *भोगवटा* (दु:ख-सुख) है *शाता-अशाता* वेदनीय का *भोगवटा* है उसमें तो कोई बदलाव नहीं होता। लेकिन हमें दु:ख नहीं आता, हम समाधि में रहते हैं।

इस शरीर में पीड़ा हो, फिर भी समाधि मरण होता है। पक्षाघात हो गया हो फिर भी मनुष्य का समाधि मरण होता है। समाधि मरण यानी क्या कि अंतिम घंटे में दादा दिखाई देने लगे या फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान (ध्यान) रहा तो वह उसका सार आ गया।

प्रश्नकर्ता : तो उस अवस्था में दु:ख नहीं बरतता न?

दादाश्री : समाधि मरण में खुद को किसी प्रकार का दु:ख ही नहीं होता। अंतिम एक घंटे में समाधि ही रहती है। अपने यहाँ 'ज्ञान' लिए हुए जितने लोगों की अभी तक मृत्यु हुई है, उनके समाधि मरण हुए हैं, प्रमाण सहित।

अत: अपने किसी महात्मा को सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। और आप तो बहुत जाग्रत इंसान हो, आपको तो ऐसा सोचना भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, जब अपने महात्माओं की मृत्यु होती है, तब हम जानते हैं कि उनका समाधि मरण ही होता है। मैंने देखा भी है। बहुत से महात्माओं की वही परिस्थिति होती है। तो जिनका समाधि मरण होता है उन्हें फिर पिछले जन्म का याद आएगा? जब दूसरा जन्म लेंगे तब?

दादाश्री : हाँ! यदि बीच में परेशानी नहीं हुई हो तो, माँ के पेट में या बाहर भी परेशानी नहीं हुई हो तो।

प्रश्नकर्ता : तो हो सकता है?

दादाश्री : समाधि मरण का आशय ऐसा नहीं है कि उसे दु:ख नहीं हुआ। शरीर को दु:ख होता है और समाधि मरण भी होता है। समाधि मरण अर्थात् उसका अगला जन्म नहीं बिगड़ता, आत्मा में ही रहता है इस प्रकार (शुद्धात्मा) का भान, वह ध्यान में रहता है। इस जन्म में दु:ख पड़ रहा हो, फिर भी उसे समाधि मरण कहते हैं।

जहाँ कषायों की निवृत्ति वहाँ समाधि

प्रश्नकर्ता : यदि किसी व्यक्ति की इच्छा समाधि मरण की हो तो जब उसका अंत काल नज़दीक आता है तब उसे कैसे भाव करने चाहिए? या फिर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : जब अपने यहाँ शादी होती है तब कैसे भाव रखते हैं? कोई मृत्यु की चिट्ठी लेकर आता है तब क्या कहते हैं हम?

प्रश्नकर्ता : आनंद के भाव रखते हैं।

दादाश्री : नहीं! वे अपशगुन के भाव आते हैं तो उसे वे कहते हैं, 'अरे, मेरे यहाँ.. यहाँ नहीं।' समाधि मरण में इसी तरह रहना पड़ता है। आत्मा के अलावा अन्य कोई लालच यहाँ नहीं। बेटी अविवाहित हो या विवाहित हो। सबकुछ व्यवस्थित के ताबे में है। और सभी में शुद्धात्मा देखकर, दर्शन करके और खुद के भाव में रहना, वह समाधि मरण है। फिर भले ही, शरीर को पक्षाघात हुआ हो, उसमें हर्ज नहीं है। शरीर की स्थिति पक्षाघात वाली हो फिर भी समाधि मरण हो सकता है, ऐसा है।

अर्थात् कैसे भाव करने चाहिए, वह समझ लेना चाहिए आपको। आपको समझ में आया? क्या उस समय आप किसी के साथ झगड़ा करोगे? जिसके साथ हमेशा ही झगड़ा होता हो, वह यदि उस झगड़े की बात निकाले तब भी उसे बंद रखेंगे कि भई... बंद रखो। फिर उसे बढ़ावा नहीं दे सकते। फिर उस लड़ाई को आगे नहीं बढ़ाते। नहीं? यदि बढ़ रही हो तो फिर बंद कर देना पड़ता है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, जब अंतिम घड़ी होती है तब तो शरीर में कुछ ताकत ही नहीं होती, फिर झगड़े को आगे बढ़ाने की बात ही कहाँ से आई?

दादाश्री : अरे! फिर भी यों अंत समय में कषाय की ताकत तो बहुत होती है! कषाय की ही ताकत है। पूरे जगत् में जो ताकत है न, वह सारी कषाय की ही ताकत है। अकषाय में ताकत नहीं होती।

जितनी कषायों से निवृत्ति, उतनी समाधि की प्रवृत्ति। जहाँ कषायों से संपूर्ण निवृत्ति, वहाँ संपूर्ण समाधि।

मृत्यु के समय आत्मा की गुफा में

मृत्यु के समय पूरी तरह से आत्मा की गुफा में ही घुस जाता है, बाहर रहता ही नहीं है, खड़ा ही नहीं रहता न! वह उसका मुख्य गुण है। चारों तरफ से जब बहुत परेशानी हो, तब गुफा में घुस जाता है। यह सब से बड़ा गुण है। जबकि बाकी सभी को, जिनके पास ज्ञान नहीं है उनके पास गुफा तो है ही नहीं, तो फिर वे उसमें जाएँगे कैसे?

चंदूभाई से अलग रहना चाहिए आपको। चंदूभाई अलग और आप अलग। अपना विज्ञान तो ऐसा है कि स्थिर रखता है। बहुत परेशानी आए, तब वह गुफा में घुस जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हर एक की अपनी-अपनी भय की लिमिट होती है! कोई ज़रा से भय से (आत्मा में) घुस जाता है और कोई ज़्यादा भय में घुसता है।

दादाश्री : हाँ! वह तो हर एक की अपनी लिमिट है लेकिन कुल मिलाकर स्वभाव तो अंत में खुद की गुफा में घुस जाने का ही है। मुझसे पूछते हैं कि 'दादा, मरते समय समाधि मरण

होगा?' तो मैंने बताया, 'अभी समाधि रहती है तो उस समय तो और भी अधिक भय रहेगा, अत: सब अंदर अपने घर में ही घुस जाएँगे बाहर निकलेंगे ही नहीं न!' अत: समाधि मरण ही होगा।

और जिसे ज्ञान नहीं है, वह कहाँ जाएगा? छोटी बेटी की शादी करना रह गया, तो वह उसमें घुस जाएगा, नहीं तो बाज़ार में घुस जाएगा। यानी कि वहाँ इन्टरेस्ट होता है, बेटी में। तो बैठे-बैठे जैसे कि अभी जाते-जाते शादी करवा देगा, ऐसी बात करता है। क्योंकि उसके पास ऐसा अन्य कोई साधन नहीं है न, कि जब भय लगे तब वहाँ चला जाए! और आपके पास तो अपने आत्मा में जाने का साधन है जबकि उसके पास साधन नहीं है, वह कहाँ जाएगा? इसलिए ऐसी कोई संज्ञा ढूँढ निकालता है, ऐसी विषय से संबंधित।

प्रश्नकर्ता : दादा, यानी कि कारण देह बन चुका होता है?

दादाश्री : वह तो बन ही चुका है लेकिन इस तरह से अतिरिक्त चित्रण करता है। जबकि हम तो अंदर आत्मा में चले जाते हैं। वहाँ पर परमानंद है ही। वहाँ चले गए तो फिर कोई दु:ख रहा ही नहीं न!

मृत्यु जैसे भय के समय भी अच्छी जागृति रहती है

यह आत्मा दिया है न! अत: भय लगने पर उसमें घुस जाता है। भय नहीं होता तब तो ज़रा बाहर से यह ले आता है, वह ले आता है। लेकिन जैसे ही बम गिरने लगते हैं, अंदर घुस जाता है। जहाँ भय नहीं हो वैसी जगह ढूँढता है, अत: अंदर घुस जाता है। अत: भय के समय यह (आत्म जागृति) बहुत अच्छी रहती है। मरते समय अच्छी रहती है या फिर जब मृत्यु जैसा भय हो न, तब बहुत अच्छी रहती है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् भय में जागृति हज़ारों गुना बढ़ जाती है?

दादाश्री : बढ़ती तो है, जागृति बढ़ती है, लेकिन हमेशा ज्ञाता-द्रष्टा के तौर पर भाव रहेगा न! लेकिन जब बाहर आफत आएगी, उस समय अंतर घुस जाएगा और अंदर घुस जाने पर संपूर्ण आनंद ही रहता है, दु:ख रहता ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : भय आए तब आत्मा में घुस जाएगा?

दादाश्री : वह तो, जो सारे बाह्यभाव हैं न, वे सब आत्मा में घुस जाते हैं, जागृति जो बाहर बर्तती थी, वह जागृति आत्मा में आ जाती है और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा हो जाता। फिर तो बाहर का वह सब भी छोड़ देता है, सभी चिट्ठियाँ लिखना बंद कर देता है और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा निर्णय होना, उसीको कहते हैं आत्मानुभव!

मृत्यु का भय ही नहीं, वह है नित्य स्वरूप

शुद्धात्मा तो परमात्म स्वरूप है, उसकी स्थिति नित्य है अर्थात् अविनाशी है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् शुद्धात्मा के रूप में अब मैं अविनाशी हूँ, मेरा किसी भी तरह से विनाश नहीं है।

दादाश्री : हाँ, नित्य हूँ अर्थात् परमानेन्ट, सनातन, शाश्वत! यह नित्यपन समझ में आता है न? आत्मा का सनातनपन समझ में आता है न?

प्रश्नकर्ता : वह अभी ठीक से पता नहीं है। मेरे अनुभव में है लेकिन बता नहीं सकता।

दादाश्री : हाँ, ठीक है। लेकिन वह तो,

अनित्य भाव तो 'मैं मर जाऊँगा, मैं मर जाऊँगा', ऐसा सब जो था न, वह अनित्य भाव चला गया, अर्थात् अब नित्य में आ गए।

वह नित्य स्वरूप लगता है न, इसलिए मरने का भय ही नहीं लगता। क्या वह नित्य स्वरूप कम है कि जिसे कभी भी, एक क्षण के लिए भी मृत्यु का भय नहीं लगा? इन सभी के सामने कह देता हूँ कि जब जाना हो तब जाना। फिर इससे ज़्यादा तो और कितना नित्यपन...

माउन्ट आबू में पालनपुर से एक भाई आए थे। वे मुझसे कहने लगे कि 'आत्मा नित्य है, उसका प्रमाण दीजिए।' तब मैंने कहा, 'वह तो, अपने हिन्दुस्तान के सभी बच्चे भी समझ जाते हैं कि भाई, आत्मा यों निकल गया।' डॉक्टर भी कहते हैं, 'भीतर से आत्मा निकल गया।' क्या आपको नित्यता का प्रमाण नहीं लगता? तब कहने लगे, 'ऐसा प्रमाण नहीं, प्रत्यक्ष प्रमाण चाहिए। एक्ज़ेक्ट प्रमाण दीजिए।' तब मैंने कहा, इस शरीर को अभी ही ले लो। हम खुद नित्य ही हैं, ऐसा हमें अनुभव में है ही और मैं इस शरीर में रहता ही नहीं। मैं एक क्षण के लिए भी शरीर में नहीं रहा। पड़ोसी की तरह रहता हूँ, 22 साल हो गए। तब उन्हें विश्वास हो गया। उन्होंने तो कबूल कर लिया कि 'जब आप शरीर ले लेने के लिए कहते हैं, तभी से आपको ऐसा भान (ध्यान) है कि आत्मा नित्य है।

प्रश्नकर्ता : नित्य है, ऐसा भान है!

दादाश्री : हाँ, भय किसलिए? अभी ही ले लो न! हमें हर्ज ही नहीं है। और उसके बावजूद भी छूट जाने की इच्छा नहीं है। क्योंकि हमारे मन में ऐसी भावना है कि 'जो सुख मैंने पाया है, वह सुख लोगों को प्राप्त हो।' बस, इतनी ही भावना है। लेकिन फिर भी यदि कोई शरीर ले ले तो हर्ज नहीं। लेकिन है, तो अच्छा है, ऐसा लगता है कि लोग कुछ प्राप्त कर ले।

शुद्धात्मा स्वभाव से ही असंग

मैंने आपको जो आत्मा दिया है, वह असंग ही दिया है। देह का निरंतर संग होने के बावजूद असंग ही है। आत्मा को कुछ स्पर्श भी नहीं करता और कुछ बाधक भी नहीं है। अत: उस रूप से रहना। निर्लेप, असंग! अग्नि का संग भी उसे स्पर्श नहीं करता, तो इस दु:ख का, शरीर का कैसे स्पर्श करेगा? अत: उसका वह स्वभाव पकड़कर रखना है।

ज्ञान देने के बाद, एक बार निर्लेप हो जाने के बाद फिर लेपायमान नहीं हो सकता, असंग होने के बाद फिर संगी नहीं हो सकता। डॉक्टर ने कहा हो कि दाहिने हाथ को पानी मत लगने देना फिर भी अनादिकाल के परिचय के कारण छू लेता है। उसी प्रकार इस अनादिकाल के परिचय की वजह से कुछ हो जाए तो कहना, 'हम निर्लेप हैं, असंग हैं' तो असंग हो जाओगे।

बुखार भले ही आए, उससे आत्मा को कुछ नहीं होगा। संग में रहने के बावजूद खुद तो असंग ही है। खुद तो ज्ञाता-द्रष्टा, शुद्ध भाव में ही है। जैसा संग वैसा रंग लगता है। आत्मा 'असंग' है। तू 'असंग' है तो तुझे रंग नहीं लगता, 'चंदूभाई' को लगता है। 'आप' तो सिर्फ 'जानते' हो!

अब, हम जैसा शुद्धात्मा बन गए हैं, उस शुद्धात्मा को कुछ भी स्पर्श कर सके, ऐसा नहीं है। उसका स्वभाव ही निर्लेप है। स्वभाव से वह असंग ही है। स्वभाव से ही है, तो फिर भला हम उसे कहाँ असंग बनाने जाएँ? उसे, जो स्वभाव से ही असंग है!

शुद्धात्मा की गुफा अव्याबाध स्वरूपी

आत्मा अव्याबाध है। अर्थात् कोई भी वस्तु, कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है कि उसे बाधा-पीड़ा दे सके।

प्रश्नकर्ता : अव्याबाध स्वरूप का अर्थ समझाइए? अव्याबाध अर्थात् क्या?

दादाश्री : अव्याबाध अर्थात् इस शरीर को कुछ बाधा-पीड़ा हो, कोई चाकू या अन्य कुछ लग जाए, गरमी लगे, सर्दी लगे, जल जाए, पानी में डुबा दे, लेकिन 'उसे' (आत्मा को) कोई भी परिणाम स्पर्श नहीं करता।

इतनी सेफसाइड है। इस दुनिया की सारी तरकीबें व्यर्थ जाती हैं। ये साइन्टिस्ट चाहे जितनी भी तरकीबें लगाकर करें न, या बाकी के सभी वे बम वाले, सभी प्रकार की तरकीबें वहाँ व्यर्थ हो जाएँगी। उसे कोई तरकीब स्पर्श नहीं कर सकती, या फिर ये तरकीबें उसे ज़रा सा भी दुःख नहीं पहुँचा सकतीं। ऐसा अव्याबाध स्वरूप है। उसे कैसा भय? डरने को रहा ही क्या? ऐसा आपका आत्मा है और यदि आप आत्मा बन गए हो तो डरना क्यों?

यह जो शरीर है न, वह रूपी है। उसे तलवार से काट सकते हैं, जला सकते हैं। रूपी अर्थात् सभी प्रकार के असर होते हैं। लेकिन वह (आत्मा) अरूपी है न, उसे काट दिया जाए फिर भी कुछ नहीं होगा। कट ही नहीं सकता न! कटता नहीं, जलता नहीं, कोई कुछ नहीं कर सकता। यह बाधा-पीड़ा रहित है, जबकि शरीर तो बाधा-पीड़ा वाला है। अतः खुद यदि ऐसा ही आत्मा बन जाए तब फिर कुछ भय रहेगा ही नहीं न!

यह जगत् प्रतिक्षण भय वाला है। इस दुनिया में कोई भी जगह भय रहित नहीं है। महात्माओं को इस अव्याबाधपन के स्वभाव को लेकर भय से बाहर रखा है। शुद्धात्मा की गुफा तो अव्याबाध स्वभाव वाली है, मैं आपको उसमें बैठा देता हूँ।

यदि कोई कहे, 'मैं आपको मार दूँगा' तो ऐसी डरने की स्थिति में उसे क्या होता है, कि 'मैं अव्याबाध हूँ, मुझे क्या मारेगा? अगर वह अव्याबाध नहीं जानता हो तो वह कहे, 'मुझे कोई मार देगा तो क्या होगा?' यदि कोई कहे, 'काट कर टुकड़े कर दूँगा।' फिर भी हमें मन में ऐसा लगेगा कि 'मैं अव्याबाध हूँ, शरीर के टुकड़े होंगे।' अर्थात् इस तरह पहले से ही उसके गुणों की स्टडी करके रखना, मज़बूत करके रखना।

अनुभव करना है, उस अव्याबाध स्वरूप का

शुद्धात्मा का *लक्ष* (जागृति) बैठने के बाद में श्रेणियों की शुरुआत होती हैं, उसके बाद खुद का स्वरूप अव्याबाध है, सूक्ष्म है, अमूर्त है, ऐसा अनुभव होता जाता है।

यह ज्ञान मिलने के बाद मनुष्य श्रेणियों की शुरुआत कर सकता है। वर्ना, श्रेणियों की शुरुआत ही नहीं कर सकता!

समुद्र जैसा अज्ञान-संसार है! और उसमें जन्म लेते हैं और मरते हैं! वहाँ यदि खुद के 'निश्चय-स्वरूप' को समझ जाए तो काम हो जाएगा!

इस पूरे संसार समुद्र में 'मैं शुद्धात्मा हूँ', कहा तो उतना उसका एक पैर नीचे टिका। समुद्र में एक पैर नीचे टिक पाया। तो हम शुद्धात्मा, ज्ञान के *लक्ष* वाले। ये जो बाहर (क्रमिक में) शुद्धात्मा बोलते हैं, उनका पैर नीचे नहीं टिका है। यह तो, पूरे संसार समुद्र में किसी भी जगह

पैर टिका ही नहीं। उतनी गहराई में जा ही नहीं पाए। जहाँ भी नीचे पैर टिकाने जाएँ, वहाँ पानी, पानी और पानी। अब, यह पैर नीचे टिक गया है। श्रेणियों की शुरुआत हो गई है। पैर जम जाने के बाद थके हुए हों फिर भी मन में तसल्ली रहती है। एक पैर पर खड़े रहते हैं उसके बाद धीरे-धीरे दूसरा पैर उठाकर सेट करते हैं लेकिन एक सेट हो जाना चाहिए। तो यह पैर सेट हो चुका है अर्थात् पुरुषार्थ शुरू हो गया। वर्ना, खुद के हाथ में पुरुषार्थ है ही नहीं न! थक जाने पर डूबे बगैर कोई चारा ही नहीं होता। यह समुद्र डुबा देगा। परंतु यह संसार रूपी समुद्र तब डुबोता भी नहीं है। भाई, बेहद थकान लगे तब भी नहीं डुबोता। हम कहें, 'डूब जाऊँगा?' तब कहता है, 'नहीं, डूब नहीं मरोगे, थके हुए ही घूमते रहो।' तो यह एक पैर नीचे रखा कि फिर श्रेणी की शुरुआत करता है। श्रेणी अर्थात् अनुभव के सारे स्टेपिंग। पहला अनुभव, दूसरा अनुभव, तीसरा अनुभव, ऐसे करते-करते जब आत्मा के अव्याबाध स्वरूप का अनुभव, हमें जैसे अव्याबाध स्वरूप का अनुभव हुआ है, वैसा ही (आपको) होगा तब उस सर्व श्रेष्ठ अनुभव हो गया, ऐसा कहा जाएगा। इस काल में जहाँ तक पहुँच सकते हैं, वहाँ तक का अनुभव हो गया, ऐसा कहा जाएगा। अव्याबाध स्वरूप का।

सूक्ष्म भाव की अनुभव श्रेणी कब पूर्ण होगी? जब, 'मैं अव्याबाध स्वरूप हूँ', ऐसा हो जाएगा, तब।

अक्रम विज्ञान में समाधि मरण

प्रश्नकर्ता : अब (महात्माओं को) मृत्यु आएगी तो कैसी आएगी?

दादाश्री : अब समाधि मरण होगा। और क्या? उस समय समाधि रहेगी। मृत्यु के समय कोई विचार नहीं आएगा। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', सिर्फ वही विचार रहेगा और यह सब आप देखते रहोगे।

'मैं चंदूभाई हूँ', वह 'अपद' है। 'अपद', वह मरणपद है। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह 'स्वपद' है।

अंतिम हेतु सिद्धकवाणी, होय ज मंत्रस्वरूपे,
ई मंतरने घूंटता घूंटता स्वानुभवपद सिद्ध वरते।

(अंतिम हेतु सिद्ध करवाने वाली वाणी, मंत्रस्वरूप ही होती है,
उस मंत्र को जपते-जपते स्वानुभवपद, सिद्ध बरतेगा।)

- नवनीत

हमने आपको शुद्धात्मा (अंतिम हेतु सिद्धक) मंत्र दिया है, उससे स्वानुभव बरतेगा। यह अजपा जाप, वह भीतर खुद के *लक्ष* की, स्वपद की स्थिरता स्थापित करेगा।

स्वानुभवपद अर्थात् 'मैं वही हूँ' और 'उसी में रहता हूँ' और 'यह (देह) पड़ोसी है', ऐसे पद को चख ले न, तो वह स्वानुभवपद कहलाता है।

स्वपद, वह निर्लेपपद है और बाकी सब नाशवंतपद हैं। स्वपद में अमरता है। ज्ञानी पुरुष ने आपको स्वपद में बैठाकर आपको अमर बना दिया है।

अपने महात्माओं को तो उस समय मृत्यु का भय ही नहीं रहेगा न! उस समय तो खुद उसी रूप बन जाएगा। अन्य कोई दखल रहेगा ही नहीं न। अर्थात् समाधि मरण होगा। खुद

अपनी मृत्यु को देखेगा। जैसे अभी तुझे दिखाई देता है न, चंदू? उसी प्रकार उस दिन भी दिखेगा। उसे समाधि मरण कहते हैं। एक बार यदि समाधि मरण हो गया तो मोक्ष जाने की तैयारी हो गई।

प्रश्नकर्ता : इस काल में समाधि मरण हो सकता है क्या?

दादाश्री : होता है न! अन्य कहीं यह नहीं हो सकता। सिर्फ यही, हमारा अक्रम विज्ञान है यह तो!

प्रश्नकर्ता : वहाँ होता है?

दादाश्री : हाँ! यहाँ वीतरागों का विज्ञान है, लेकिन अभी अक्रम के तौर पर, यहाँ पर हमारे निमित्त से निकला है। इससे सभी का समाधि मरण होता है। समाधि मरण नहीं हो तो फिर किस काम का? पूरी ज़िंदगी दादा की आज्ञा में रहे, कर्म नहीं बांधे। जिन्हें आर्तध्यान-रौद्रध्यान नहीं होते, उन्हें होता है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद समाधि मरण होता है, वह कैसे?

दादाश्री : निरंतर समाधि रहती है, फिर मृत्यु के समय तो बल्कि तुरंत खुद की गुफा में ही घुस जाएगा। शुद्धात्मा में ही घुस जाएगा। अभी यदि दुःख आता है तो भी शुद्धात्मा में बैठ जाता है। उस दिन तो एक्ज़ेक्ट रहेगा। अपने बहुत से महात्माओं की मृत्यु हुई है, वे सभी समाधि मरण ही रहे।

समाधि मरण के समय 'शुद्धात्मा' का ही भान

इसलिए मृत्यु से कहना कि ''तुझे जल्दी आना हो तो जल्दी आ, देर से आना हो तो देर से आ, मगर 'समाधि मरण' बनकर आना!''

समाधि मरण अर्थात् आत्मा के सिवाय और कुछ याद ही नहीं हो। खुद के स्वरूप शुद्धात्मा के अलावा दूसरी जगह चित्त ही नहीं हो, मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार कुछ भी अस्थिर नहीं हो! निरंतर समाधि! देह को *उपाधि*(बाहर से आने वाला दुःख, परेशानी) हो, फिर भी *उपाधि* छुए नहीं! देह तो *उपाधि* वाला है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : सिर्फ *उपाधि* वाला ही नहीं, व्याधि वाला भी है या नहीं? ज्ञानी को *उपाधि* नहीं छूती। व्याधि हुई हो तो वह भी नहीं छूती। और अज्ञानी तो, व्याधि नहीं हो तो उसे बुलाता है! समाधि मरण अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान रहना! अपने कितने ही महात्माओं की मृत्यु हुई, उन सभी को 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान (ध्यान) रहा था।

महावीर भगवान ने कहा है कि, 'एक क्षण के लिए भी यदि आत्मा होकर आत्मा बोला तो मुक्त हो जाएगा। आत्मा होकर 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा होने के बाद बोला। तो आप तो (आत्मा) होने के बाद, कितने ही समय से बोलते हो। आप 'मैं शुद्धात्मा' बोलते हो, वह तो आत्मा होकर आत्मा बोलते हो।

ज्ञानी की कृपा से 'अजन्मा-जन्म' पद

ज्ञानी मिल जाएँ और ज्ञान प्राप्त कर ले तो अजन्मा स्वभाव प्रकट हो जाता है और जन्मोंजन्म का स्वभाव खत्म हो जाता है।

अनेक जन्म लिए लेकिन अजन्मा होने की बारी नहीं आती। परंतु हम से मिले हो तो मोक्ष की टिकिट काट कर सारी भटकन बंद करवा देते हैं।

वे जन्म वाले जन्म तो बहुत बार हुए। और फिर मरना पड़ा। इसे तो अमरपद प्राप्त हुआ, ऐसा कहा जाएगा।

हमारे ज्ञान लिए हुए महात्मा मरेंगे तो नहीं न? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : शरीर मरेगा, खुद तो आत्मा है। अब मरने का सवाल ही कहाँ रहा? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : तू मरेगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं मरूँगा।

दादाश्री : हाँ! देखो, अमर बनकर बैठे हैं न!

स्वपद में अमरता है। ज्ञानी पुरुष ने स्वपद में बैठाकर आपको अमर बना दिया। तभी तो अब रौब जमाते हैं।

दादा महात्माओं को देते हैं 'अमरपद'

प्रश्नकर्ता : अमरपद के बारे में समझाइए?

दादाश्री : अमरपद अर्थात् क्या? आत्मज्ञान हो जाए अर्थात् अमरपद। 'खुद आत्मा हूँ', ऐसा भान रहे तो वही अमर है। फिर मरना ही नहीं पड़ता न! फिर यदि आप चंदूभाई हो तो मरोगे न? चंदूभाई का पद छूट गया। अब मरोगे या जीवित रहोगे?

प्रश्नकर्ता : मैं तो अमर हूँ न, दादा! चंदू को मरना है।

दादाश्री : हाँ! तुझे तो नहीं मरना है न? चंदू मरेगा। जो जीवित है, दवाईयाँ लेता है, वह मरेगा। जो जीवित है, वह मरेगा। जो जीवित नहीं है, नित्य है, उसे मरना होगा क्या? अविनाशी की मृत्यु होगी क्या? अविनाशी बनकर बैठा है न? तब ठीक है।

यह ज्ञान लेने के बाद फिर मरना नहीं पड़ता, उसे अमर कहते हैं। जिसे यह अमर का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, उसे मरने से डर नहीं लगता।

जो मरने वाले का मालिक बनता है, उसे मरना पड़ता है। जो मरने वाले का मालिक नहीं है, उसे मरना ही नहीं पड़ता। मैं 'अमरपद' लेकर आया हूँ और आपको भी वही पद देता हूँ।

अमरपद में मरना नहीं होता

आत्मा अजर, अमर, अखंड और परमानंदी स्वरूप वाला है। आपका स्वरूप परमानंदी है, अजर है, अमर है, अविनाशी है।

आत्मा स्थूल वस्तु नहीं है कि मर जाए। वह तो सूक्ष्मतम वस्तु है। उसकी मृत्यु होती ही नहीं। वह आकाश जैसी ही वस्तु है। उसका नाश ही नहीं होता और वह पहाड़ के आर-पार चला जाता है, दीवारों के आरपार चला जाता है। उसे अग्नि नहीं जला सकती। पानी गीला नहीं कर सकता। उसके अन्य बहुत से गुण हैं।

अत: यदि आप मरने वाले हो तो रिलेटिव में हो और यदि आपको ऐसा विश्वास हो गया कि, 'मैं अमर ही हूँ और शरीर मरेगा', तो आप रियल में हो।

यह तो जहाँ मरण पद है वहीं पर तू मानता है कि 'मैं ही चंदू हूँ'। वह पद पूरा बदल गया तो (अमर) हो गया, (मरण) बंद हो गया।

यह चंदू तो पहचानने का साधन है। सचमुच 'मैं क्या हूँ', वह तो जानना ही चाहिए न? सचमुच अगर तू वह जानता है तो फिर तेरा मरण रहा ही नहीं, वह अमरपद हुआ।

अमरपदधारी को भय किसका?

प्रश्नकर्ता : सही है दादा, अब हमें मृत्यु का भय भी नहीं लगता!

दादाश्री : आपके मन में तो ऐसा ही लगता है कि दादा हैं हमारे साथ। अत: भय नहीं रहता। और हम शुद्धात्मा बन गए हैं। अमरपद प्राप्त किया है! अमरपद को किसका भय?

आपको तो अमरपद दे दिया है। मरेगा तो शरीर मरेगा, आप तो अमर ही हो।

इंसान मरता तो एक बार है लेकिन कहता है 100 बार कि 'अरे! मर गया, अरे! मर गया।' लोग 100 बार बोलते हैं या नहीं? यह भी कोई तरीका है इंसानों का? मृत्यु आए तब भी 'मर गया,' ऐसा नहीं बोलना चाहिए क्योंकि हम तो अमर हैं, हमारी मृत्यु होगी ही कैसे?

अपने महात्मा तो पुरुष बन चुके हैं। यदि सांस लेने में तकलीफ होने लगे तो भीतर सफोकेशन होता है अत: फिर वह खुद की गुफा में बैठ जाता है कि 'चलो, हम अपनी सेफसाइड वाली जगह पर चलें।' यानी कि खुद अमरपद के भान वाले हैं, ये!

सदेह अमर! अर्थात् इस देह के साथ हम सभी अमर ही बन गए हैं न! देह किसी का अमर नहीं होता। *पुद्गल* विनाशी ही है और आत्मा अविनाशी।

बम गिरने लगे तो भीतर डर जाता है, उस समय कहना कि, 'ये बम तो, जिसे मरना है उसके लिए हैं, चंदूभाई के लिए मेरी तो उम्र ही नहीं है। जिसकी उम्र है उसे मरना है, मैं तो अमर हूँ।'

फिर 'अमरपद' बूझे नहीं, झगे नहीं

जब तक हम अपना खुद का अमरपद नहीं जान लेते, उसकी प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक कल्याण नहीं हो सकता। यदि अमरपद को जान लिया तो कल्याण हो जाएगा! उसके वह पद चला नहीं जाता या डिगता नहीं।

अपने महात्माओं ने तो अमरपद बूझ(गूढ़ बात का जान लेना) लिया है, जान लिया है अर्थात् उसी रूप बन गए हैं और बाहर वाला यदि कोई कहे कि हमें साक्षात्कार हुआ है तो वह उस अमरपद के फोटो का है, मूल वस्तु का नहीं।

भूतकाल और भविष्यकाल से हमें लेना भी नहीं है और देना भी नहीं है। जो वर्तमान में ही रहे, उसे कहते हैं अमरपद। हम वर्तमान में, वैसे के वैसे ही रहते हैं। यदि रात में उठाओगे तो भी वैसे ही और दिन में उठाओगे तो भी वैसे। जब भी देखो तब वैसे के वैसे ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह आत्मा अमर है तो यदि उस आत्मा को अपने खुद (के बारे में) समझ में आ जाए कि, 'मैं शुद्धात्मा ही हूँ', तब फिर क्या उसे दूसरा शरीर धारण नहीं करना पड़ेगा?

दादाश्री : नहीं! ज़रा सा मैल चिपक जाता है। इसलिए फिर 1-2 जन्म लेने पड़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आत्मा अमर रहेगा, ऐसा?

दादाश्री : आत्मा अमर ही है और वह (महात्मा) आत्मा में ही रहते हैं। उनका उपयोग, जागृति सभी आत्मा में ही रहते हैं।

जहाँ मृत्यु का भय नहीं वहाँ 'मोक्ष का वीज़ा'

आपको यह अद्‌भुत ज्ञान दिया है। रात में जब जागो तब हाज़िर हो जाता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' आप जहाँ कहोगे वहाँ हाज़िर हो जाएगा। और बहुत मुसीबत आने पर तो निरंतर जाग्रत रहेगा। बहुत बड़ी मुसीबत आने पर और उससे भी ज़्यादा बड़ी मुसीबत आने पर बम गिरने लगे तब तो फिर गुफा में घुस जाएगा। केवलज्ञानी जैसी दशा हो जाएगी। बाहर बम गिरने पर तो केवलज्ञान जैसी दशा हो जाएगी, ऐसा ज्ञान दिया है।

प्रश्नकर्ता : केवलज्ञान अर्थात् क्या?

दादाश्री : केवलज्ञान अर्थात् केवल आत्मा ही, अन्य कोई भी चीज़ में मैं-पन नहीं। मैं-पन निरंतर किसमें? आत्मा में ही। आत्मा, वह ज्ञानस्वरूप है और ज्ञान में ही मैं-पन। आत्मा, जिसे शुद्ध चैतन्य कहा जाता है, वह कोई वस्तु नहीं है, मात्र केवलज्ञान है। सिर्फ ज्ञान ही है, केवलज्ञान ही है।

किसी भी संयोग में भय न लगे। चाहे कैसे भी एटमबम डाले जाएँ। चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन भय न लगे। अंदर पेट में पानी न हिले तब समझना कि विज्ञान पूर्ण हो गया है। या तो जिसने ऐसा लक्ष्य तय किया हो कि 'किसी भी संयोग में मुझे भय नहीं लगना चाहिए।' जो उस रास्ते पर चलता है, वह मनुष्य में विज्ञान पूर्ण होने ही वाला है।

यहाँ पर मृत्यु का समय आने पर भी अगर भय न लगे तो समझना कि अब मोक्ष के लिए 'वीज़ा' मिल गया! भय नहीं लगना चाहिए। किसी भी तरह से भय नहीं लगना चाहिए। क्योंकि जहाँ मालिक ही आप हो, वहाँ फिर भय किसका? मालिक (आप) हो, दस्तावेज है, टाइटल है, सभी कुछ आपके पास है लेकिन आपको पता नहीं है, तो फिर क्या हो सकता है?

एटमबम गिरने वाला हो, तब भी एटमबम फेंकने वाला घबराए लेकिन जिस पर गिरने को है, वह नहीं घबराए। इतना अधिक ताकत वाला विज्ञान है यह!

मृत्यु के समय दादा हाज़िर, आत्मा हाज़िर

प्रश्नकर्ता : क्या महात्माओं को पता चल सकता है कि मृत्यु कब होनी है? यदि वह आपकी सभी आज्ञाओं का पालन करता है और ज्ञाता-द्रष्टा रहता है तो क्या उसे ऐसा पता चल सकता है कि उसका अंत समय आ गया है?

दादाश्री : पता चल सकता है। यदि नहीं चले तो भी हर्ज नहीं है। लेकिन ऐसे में अंत तक दादा संभाल लेंगे। इसलिए चिंता मत करना। इतना करने वाले को दादा हर प्रकार से संभाल लेंगे।

प्रश्नकर्ता : उस समय कोई अनुभव होता है?

दादाश्री : अनुभव हो ही जाएगा न! आत्मा में ही रहेगा, उस क्षण। अंतिम एक घंटे आत्मा में ही रहेगा, बाहर निकलेगा ही नहीं। क्योंकि बाहर का वातावरण भयानक लगेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा की भक्ति करने में जिस शरीर ने साथ दिया है और दे रहा है तो अंतिम समय, शरीर छोड़ते समय अंतिम घड़ी में दादा

हाज़िर रहें, ऐसा भाव करता हूँ, प्रभु मुझे ऐसा देना।

दादाश्री : जब स्टीमर डूब रहा हो, तब उस स्टीमर की ममता छोड़ देते हैं या नहीं छोड़ देते? स्टीमर डूब रहा हो तो एक तरफ कहते हैं कि 'चलो, सभी पैसन्जर्स इन नावों में उतर जाओ। कुछ भी साथ में मत लेना। हाथ में वज़न मत लेना।' तब ममता छोड़ देते हैं न! नहीं छोड़ते? या फिर वह उस स्टीमर में ही बैठे रहते हैं? और फिर यदि ऐसा कहें कि 'हर एक परिवार में से सिर्फ दो ही लोग लेने हैं!' तो बच्चों को जाने देता है? नहीं जाने देता। बूढ़ा खुद जाता है? ऐसे क्या कोई किसी और को जाने देता है? वह तो सभी को धक्का देकर, उसे न जाने दे रहे हों, फिर भी चला जाता है न? अरे, सभी को धक्के मारकर चला जाता है। 'सारी ममता छोड़ देने की शर्त पर मुझे जीवित रखो।' तो मरते समय ऐसे खेल होते हैं! अपने ज्ञान वाले तो अंदर आत्मा में घुस जाते हैं न, फिर अगर हम कहें कि 'बाहर निकलो न!' तब कहते हैं 'नहीं भई, मुझे अब कुछ नहीं चाहिए।' इसे समाधि मरण कहा जाता है। बाहर शरीर में उं.. उं... हो रहा होता है और अंदर खुद समाधि में रहता है। अंतिम घड़ी में इतना अधिक आज्ञा में रहता है। इसलिए कुछ चिंता नहीं करनी है।

अंतिम समय में दादा की हाज़िरी बरतेगी ही

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के समय दादा हाज़िर रहेंगे?

दादाश्री : हाँ! हाज़िर तो, वास्तव में हाज़िर रहेंगे। दादा मुश्किल समय में भी हाज़िर रहते हैं न? पूरा दिन रहते हैं! तो बस! फिर हो चुका। 'पूरे दिन हाज़िर रहते हैं', ऐसा कह रहे हैं न! यों ही कभी मुश्किल में हाज़िर रहते हैं तो क्या मरते समय नहीं रहेंगे?

अतः आपको बहुत नहीं सोचना है कि दादा हाज़िर रहना। इस प्रकार से दादा से विनती भी नहीं करनी है।

अनंत जन्मों तक मरे हैं लेकिन सभी मरण कु-मरण थे, समाधि मरण नही हुआ था और अब समाधि मरण होगा। क्योंकि जब कोई सांसारिक तकलीफ आती है तब तू चंदू के रूप में रहता है या आत्मा बन जाता है?

प्रश्नकर्ता : आत्मा बन जाता हूँ।

दादाश्री : हाँ, तो कोई मृत्यु जैसी आफत आ जाए, उस घड़ी अंदर आत्मा बन ही जाता है! आफत आई कि बाहर खड़ा नहीं रहता, होम में (आत्मा में) घुस जाता है। वही है समाधि मरण। संसार का अंतिम स्टेशन क्या होना चाहिए? समाधि।

प्रश्नकर्ता : क्या महात्माओं की मृत्यु समाधि में ही होगी?

दादाश्री : हमारी आज्ञा का पालन करेगा तो हम हाज़िर रहेंगे और समाधि मरण होगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् समाधि मरण के समय हम आत्मा में रहते हैं?

दादाश्री : हाँ, समाधि मरण अर्थात् 'खुद के स्वरूप' के अलावा और कुछ भी याद न रहे। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार कुछ भी हाज़िर न रहे। आत्मा में ही रहे।

समाधि मरण के समय आत्मा में रहते हैं! महात्माओं की अंतिम घड़ी में तो दादा निरंतर हाज़िर रहेंगे!

जय सच्चिदानंद

आज्ञा और सत्संग से बढ़े जागृति

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें प्रकृति छोड़नी है या नहीं?

दादाश्री : बस और कुछ भी नहीं, प्रकृति क्या कर रही है उसे देखते रहना है। प्रकृति से जुदा होने के बाद, ज्ञानीपुरुष जुदा कर दें और पुरुष बना दें, तब फिर देखते ही रहना है। जब तक उसमें 'मैं चंदूभाई ही हूँ' ऐसा था, तब तक प्रकृति में ही थे! पिछले जो उदय हैं, अब उन उदयों को सिर्फ देखना है। प्रकृति जो करती है, मन करता है, बुद्धि करती है, उन सब को देखना है। उसके बजाय अंदर दखल करने जाते हो। आपको यह देखते रहना है कि वह अंदर क्या दखल कर रहा है। उसके बजाय आप भी चले जाते हो अंदर। उसी से कच्चा रह जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, उसे पक्का करने का उपाय क्या है?

दादाश्री : यह सत्संग और आज्ञा पालन, बस। दोनों का मिक्स्चर होगा तो हो जाएगा!

अब यह जो प्रकृति है, वह मिश्रचेतन कहलाती है या तो पावर चेतन कहलाती है। पावर चेतन यानी क्या? नाम मात्र को भी चेतन नहीं। पावर खड़ा हो गया है। जैसे कि यहाँ पर एक हीटर के सामने कोई एक चीज़ पड़ी हो तो, वह पूरी गरम हो जाती है या नहीं हो जाती? हीटर की इच्छा नहीं है कि मुझे इसे गरम करना है।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति को मिश्रचेतन कहा गया है। इस मिश्रचेतन के अंदर का चार्ज हो चुका भाग यदि निकल जाए यानी कि सारा डिस्चार्ज हो जाए, तो फिर क्या बचेगा?

दादाश्री : प्रकृति खुद ही चार्ज हो चुका भाग है इसलिए जब वह खत्म हो जाता है, तब प्रकृति भी खत्म हो जाती है।

प्रकृति ही सारा डिस्चार्ज कर देती है। इसीलिए फिर कहते हैं न, कि चले जाना पड़ेगा भाई (मृत्यु हो जाएगी)। इतनी जल्दबाज़ी क्यों मचा रहा है? चले जाना पड़ेगा, डिस्चार्ज हो जाएगा तब! तब मैंने पूछा, 'जल्दी जाना है?'

प्रश्नकर्ता : तो दादा, क्या प्रकृति का स्वभाव ही ऐसा है कि डिस्चार्ज होती ही रहती है?

दादाश्री : निरंतर। उसका स्वभाव ही है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् प्रकृति को मात्र देखते ही रहना है जैसा कि आप कहते हैं। 'प्रकृति डिस्चार्ज हो रही है उसे तू देखता रह, तो कभी न कभी प्रकृति खत्म हो जाएगी।'

दादाश्री : हाँ, देखते रहो। किसी की पागल होती है, किसी की समझदार होती है, किसी की अर्ध पागल होती है, किसी की आधी समझदार होती है, ऐसी इन सभी प्रकृतियों को देखते रहना है। कोई कढ़ी ही खाता रहता है, कोई दाल ही खाता रहता है, कोई लड्डू ही खाता रहता है, कोई जलेबी ही खाता रहता है, इन सब को देखते रहना है। प्रकृति के गुण, अपनी प्रकृति के क्या गुण हैं, उन्हें देखते रहना है। आप नहीं जानते?

प्रश्नकर्ता : जान सकते हैं न, क्यों नहीं जान सकते? उपयोग में रहें, वही न?

दादाश्री : हाँ, देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : सभी खुद की प्रकृति लेकर आए हुए हैं?

दादाश्री : हाँ, प्रकृति लेकर आए हुए हैं। प्रकृति अर्थात् रिकॉर्ड करके लाए हैं। अत: फिर जैसी रिकॉर्ड होती है, वैसी ही बजती रहती है पूरे दिन। तुझ में तेरी रिकॉर्ड बजती है, इसमें इसकी रिकॉर्ड बजती है। तूने सुनी नहीं है तेरी रिकॉर्ड? तेरी रिकॉर्ड को सुना है? ऐसा! बहुत अच्छी लगती है? अच्छी नहीं लगती? नहीं? जबकि इस भाई को पसंद है खुद की रिकॉर्ड। पसंद नहीं है रिकॉर्ड? प्रकृति अर्थात् रिकॉर्ड किया हुआ। वह फिर बजती ही रहती है पूरे दिन! उसे देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति को जैसे-जैसे देखें, वैसे-वैसे कम होती जाती है?

दादाश्री : कम हो जाती है इसलिए फिर से बीज नहीं डलते। ऐसा लगे कि इन अभिप्रायों ने अंदर उलझा दिया है तो फिर देखो। देखने से शुद्धता को प्राप्त करता है। जैसे-जैसे शुद्धात्मा को देखे वैसे-वैसे प्रकृति शुद्धता को प्राप्त करती है।

प्रश्नकर्ता : जब तक प्रकृति को देखे नहीं, तब तक कम नहीं होती?

दादाश्री : जब तक प्रकृति को देखे नहीं तब तक मोक्ष में नहीं जा सकते।

प्रश्नकर्ता : हम अपनी खुद की प्रकृति को देखते रहें तो शुद्धिकरण हो जाएगा उसमें?

दादाश्री : तब आप ज्ञाता-दृष्टा बन गए, ऐसा, कहा जाएगा। खुद की प्रकृति को देखना, वही है ज्ञाता-दृष्टा पद। ये पेड़-पत्ते वगैरह देखना, वह ज्ञाता-दृष्टापन नहीं है। वह तो बुद्धि भी देख सकती है, वह इन्द्रियगम्य है लेकिन अतिन्द्रिय ज्ञान से तो यह पूरा जगत् जैसा है वैसा दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : अब यह प्रकृति कम हो जाए, उसके लिए ज्ञानी दृष्टि बदल देते हैं न?

दादाश्री : तू अलग है और यह अलग। अब इस प्रकृति को तुझे देखना है। जैसे सिनेमा में फिल्म देखते हैं न, वैसे इस प्रकृति में हम यह सब देख सकते हैं कि मन क्या-क्या कह रहा है, मन क्या-क्या सोच रहा है। उसे देखना ही है, फिल्म है। वह ज्ञेय है और हम ज्ञाता हैं। यह ज्ञेय-ज्ञाता का संबंध है। वह फिल्म है और मैं देखनेवाला, दोनों जुदा हो गए।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में ओनलाइन सत्संग कार्यक्रम

25 से 28 जून - नोर्थ अमरिका के महात्माओं के साथ सत्संग शिविर

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- 'अरिहंत' चैनल पर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, रात 8 से 9
- 'वालम' पर रोज 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- 'स्वरश्री' पर हर रोज सुबह 11-30 से 12
- 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8, रात 8-30 से 9-30 (हिन्दी में)
- 'साधना' पर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- 'उड़ीसा प्लस' टी.वी. पर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में-केवल उड़ीसा राज्य में)
- 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- 'आस्था कन्नड़ा' पर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)

USA - Canada

- 'TV Asia' पर रोज सुबह 7-30 से 8 EST

U K

- 'वीनस' टी.वी. पर रोज सुबह 8 से 8-30 GMT (हिन्दी में)
- 'वीनस' टी.वी. पर रोज सुबह 8-30 से 9 GMT
- 'MA TV' पर रोज शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- 'आस्था ग्लोबल' पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 IST
  (डिश टी.वी. चैनल UK -849, USA-719) (गुजराती और हिन्दी में)

जून 2021
वर्ष-16 अंक-8
अखंड क्रमांक - 188

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

'शुद्धात्मा' के लक्ष के साथ देह छूटे, वही है वास्तव में समाधि मरण

अपना ज्ञान ही ऐसा है कि जब मृत्यु का समय आता है तब 'खुद' पूर्ण रूप से प्रगट हो ही जाता है। उस समय 'खुद' गुफा में ही घुस जाता है। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार सब चुप हो जाते हैं! जब बम गिरने वाला होता है तब कैसे चुप हो जाते हैं! उसी प्रकार ये सभी चुप हो जाते हैं। जब अंतिम समय आता है तब 'खुद' का सारा भाग संकुचित कर लेता है और अपनी समाधि में ही रहता है। शुद्धात्मा के लक्ष सहित ही शरीर छूटता है। तब मृत्यु के समय समाधि हो जाती है। अपने सम्यक् द्रष्टि वाले महात्माओं का समाधि मरण होता है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.